मूल्य : 20/- पंजीकरण संख्या : UPMUL/2016/76974 डाक पंजीकरण संख्या : UP/GBD- 249/2020-2022

वर्ष : ५ जून : २०२१, विक्रमी सम्वत् : २०७८
सृष्टि सम्वत् : १९६०८५३१२२, दयानन्दाब्द : १९८ अंक : ७२

ओ३म्

।। कृण्वन्तो विश्वमार्यम् ।।

सत्य और ज्ञान से भरपूर आर्यसमाज नोएडा का मासिक मुख

विश्ववारा संस्कृति

मानवीय जीवन मूल्यों की संरक्षक पत्रिका

"सा प्रथमा संस्कृतिर्विश्ववारा"

नमो ब्रह्मणे नमस्ते वायो त्वमेव प्रत्यक्षं ब्रह्मासि। त्वामेव प्रत्यक्षं ब्रह्म वदिष्यामि ऋतं वदिष्यामि सत्यं वदिष्यामि। तन्मामवतु तद्वक्तारमवतु। अवतु माम्। अवतु वक्तारम्।।

ईश्वर का व्यापक ज्ञानस्वरूप पूज्य और सहज स्वभाव जानकर हम उसकी उपासना करें तथा जीवन में सदा सत्य का आचरण करें।

पं. रामप्रसाद बिस्मिल
जन्म दिवस : 11 जून

अमर शहीद ऊधम सिंह
पुण्यतिथि : 13 जून

पंडित चमूपति, एम.ए.
स्मृति दिवस : 15 जून

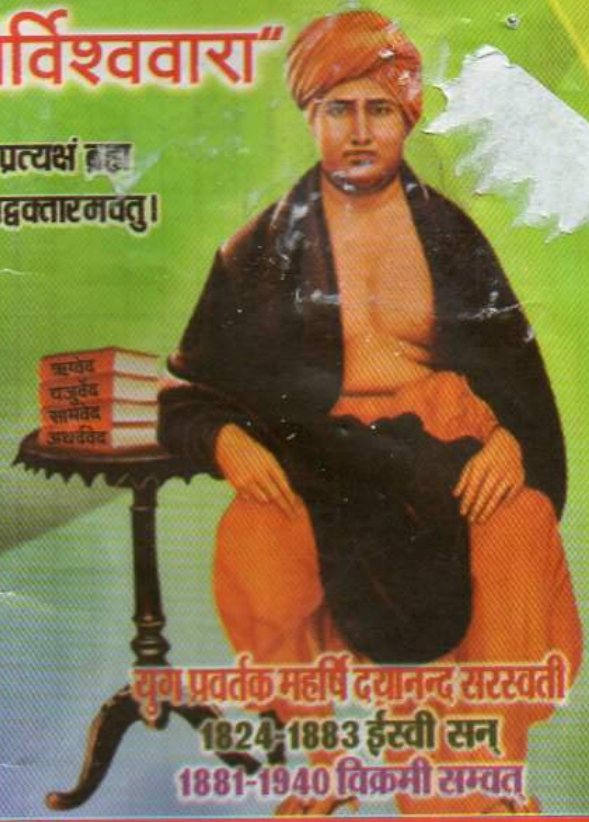

युग प्रवर्तक महर्षि दयानन्द सरस्वती
1824-1883 ईस्वी सन्
1881-1940 विक्रमी सम्वत्

अमर शहीद आर्यवीर पं. रामप्रसाद 'बिस्मिल' विशेषांक : राष्ट्र का शत्-शत् नमन!!

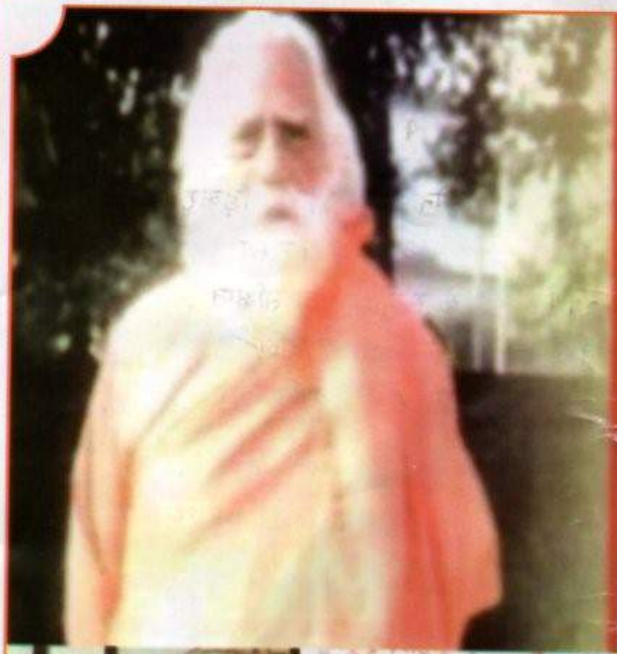

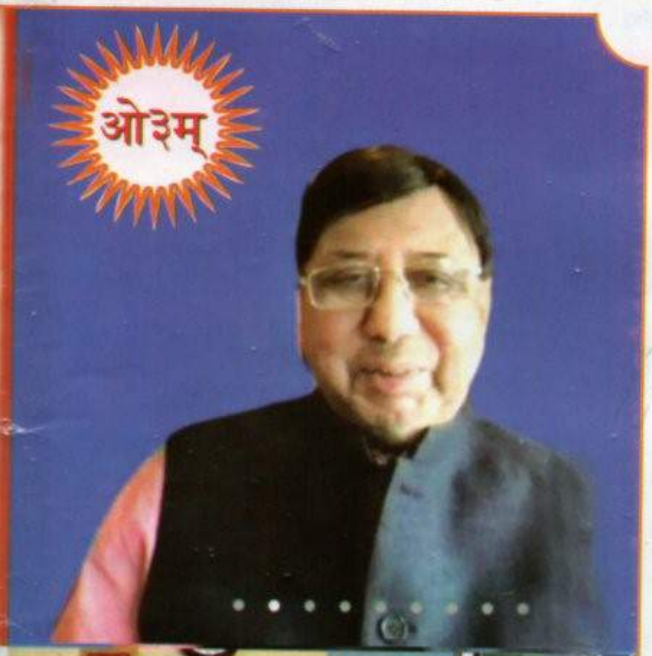

स्वामी श्री दीक्षानन्द जी का भव्य कार्यक्रम बेविनार द्वारा आयोजित किया गया जिसमें गणमान्य लोगों ने भाग लिया।

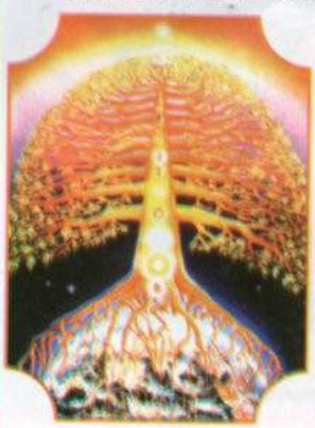

ओ३म्

।। कृण्वन्तो विश्वमार्यम्।।

विश्ववारा संस्कृति

मानवीय जीवन मूल्यों की संरक्षक पत्रिका

संरक्षक
श्री आनंद चौहान, श्री सुधीर सिंघल

प्रधान
श्री शैलेन जगिया

प्रबंध संपादक
आर्य कै. अशोक गुलाटी

संपादक
आचार्य डॉ. जयेन्द्र कुमार

सह संपादक
आचार्य ओमकार शास्त्री

प्रकाशक और मुद्रक
स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक एवं संपादक डॉ. जयेन्द्र कुमार द्वारा वत्स ऑफसेट, मुद्दा हाऊस, सी-ब्लॉक, बारात घर, चौड़ा रघुनाथपुर, सेक्टर-22, नोएडा से मुद्रित एवं आर्य समाज, बी-69, सेक्टर-33, नोएडा, गौतमबुद्धनगर से प्रकाशित किया।

पंजीकरण संख्या : UPMUL/2016/76974

घोषणा पत्र संख्या : 153/2016-17, Postal Registration No.- UP/GBD- 249/2020-2022
Date of Dispatch 12 Every Month

मूल्य

एक प्रति	: 20/-	वार्षिक	: 250/-
पांच वर्ष	: 1100/-	आजीवन	: 2500/-

विदेश में शुल्क : 3100/-

अनुक्रमणिका

क्रम सं.	विषय	पृष्ठ
1.	संपादकीय : कोरोना महामारी में छोड़कर...	2
2.	आर्यसमाज जीवित और उदात्त संस्था	3
3.	सत्यार्थ प्रकाश के समुल्लास का संक्षिप्त...	4-5
4.	मातृ दिवस पर पन्ना धाय के बलिदान...	6-7
5.	वैदिक धर्म के पुनरुद्धार में ऋषि दयानन्द...	8-9
6.	कोरोना टीके से जुड़ी वह भूल जिसने...	10
7.	धर्मः (संस्कृत)	11
8.	महापुरुषों को नमन...	12-14
9.	योग ही क्यों जीवन सार	15
10.	कोरोना से बचने के लिए पूरी सावधानी...	21
11.	समाचार-सूचनाएं	22
12.	सुस्वास्थ्य : कोरोना के इलाज में कारगर नीम...	24

पाठकवृंद : कृपया स्वयं समाज एवं राष्ट्र के उत्थान के लिए 'विश्ववारा संस्कृति' के आजीवन सदस्य बनकर जीवन पथ को पुष्पित, प्रफुल्लित और प्रमुदित करें। आपका चित्र पत्रिका में प्रकाशित होगा। आपके बहुमूल्य सुझावों का हम स्वागत करते हैं।

लेखकवृंद से अनुरोध है कि रचना मौलिक एवं अप्रकाशित हो, रचना का लेखन स्पष्ट और सुपाठ्य हो। दो प्रतियां उस रचनाकार को भेज दी जाएगी, जिनकी रचना प्रकाशित हुई है।

विज्ञापन दर

पिछला कवर पृष्ठ	:	10,000 रुपये
कवर पृष्ठ नं.-2	:	7000 रुपये
कवर पृष्ठ नं.-3	:	5000 रुपये
पूरा पृष्ठ अंदर	:	2500 रुपये
आधा पृष्ठ अंदर	:	1500 रुपये

'विश्ववारा संस्कृति' में सभी पद अवैतनिक हैं। प्रकाशित विचारों से संपादक का सहमत होना आवश्यक नहीं है। सभी विवादों का न्याय क्षेत्र गौतमबुद्धनगर होगा।

संपादकीय कार्यालय

आर्य समाज, बी-69,
सेक्टर-33, नोएडा- 201301
गौतमबुद्धनगर, (उ.प्र.)
दूरभाष : 0120-2505731,
9871798221, 7011279734
9899349304
captakg21@yahoo.co.in

Web : www.noidaaryasamaj.org, E-mail : info.aryasamajnoida33@gmail.com

संपादकीय...

।।ओ३म्।।

कोरोना महामारी में छोड़कर चले गए आत्मीयजनों के प्रति विनम्र श्रद्धांजलि

आप सब वर्तमान परिस्थितियों की निष्ठुरता का सामना कर रहे हैं। ये परिस्थितियां केवल निष्ठुर ही नहीं डराने वाली भी हैं। कोरोना का जो भयानक रूप आप देख रहे हैं उसकी कल्पना मात्र से ही व्यक्ति की कंपकंपी छूट जाती है। एक तो रोग भयानक दूसरा उससे लड़ने की हमारी आधी-अधूरी तैयारी परिस्थितियों को और कठिन बना रही है। इस महामारी के कारण बहुत सारे आत्मीयजन हमें छोड़कर चले गये हैं। किसी के बच्चे गये किसी के पति चले गये, किसी का पिता किसी के भाई और कोई अपने छोटे बच्चों को विलखता छोड़ गया है। बहुत से घरों में तो कई-कई लोग एक साथ चले गये। ऐसे भी समाचार हैं कि कई-कई पीढ़ियां एक साथ खत्म हो गयी हैं। आर्य समाज गुरुकुल आदि के साथ तथा मेरा निजी संबंध जिनके साथ रहा है उनको याद करता हूं तथा विनम्र श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं। समादरणीय अमेटी स्कूल के चेयरपर्सन श्रद्धेय डॉ. अशोक कुमार चौहान जी की सासू मां पूजनीया माता लीलावती, जिनका जीवन उत्साह, प्रसन्नता, सद्भाव, साधुभाव, श्रद्धा ईश्वर भक्ति से परिपूर्ण था एक लम्बा पवित्र जीवन जीकर गयी हैं। माता जी को विनम्र श्रद्धांजलि।

आर्यजगत के गौरव श्री दर्शन अग्निहोत्री जी महान याज्ञिक एवं प्रेरणादायी थे। उनका जाना सम्पूर्ण आर्यसमाज के लिए अपूरणीय क्षति है। गुरुकुलों के प्रति उनका समर्पण अतुलनीय था। महान आत्मा को शत्शत् नमन। श्री विजय गर्ग आर्यसमाज आदर्शनगर के प्रधान मेरे अभिन्न मित्र उनका जाना अल्पायु में परिवार तथा आर्यसमाज के लिए बहुत बड़ा सद्मा है। बहुत कमाल के व्यवहार कुशल इंसान थे। परमात्मा अमृतमयी गोद में स्थान दें। श्री रमेश चन्द्र जी आर्यसमाज नोएडा के समर्पित सदस्य और उनके सुपुत्र निखिल चन्द्र अल्पायु में हम सबको छोड़ गये। अत्यंत दुखद घटना शब्द ही नहीं है कुछ कहने के लिए, प्रभु की बात प्रभु जाने। प्रार्थना है परिवार को परमात्मा हिम्मत एवं शक्ति दें। पितृ तुल्य श्री महेन्द्र नाथ चाटली जी वर्षों तक आर्य समाज मयूर विहार के प्रधान रहे एक कुशल प्रशासक सुलझे हुए जिंदादिल इंसान, विद्वान, लेखक, चिंतक, मनीषी थे शत्-शत् नमन। श्रीमती संध्या शर्मा जी वैदिक विदुषी के जीवन साथी का कोरोना से निधन हो गया। वे बहुत ही साधु प्रवृत्ति के इंसान थे अत्यंत दुःखद। परमात्मा से प्रार्थना है कि सभी पवित्र आत्माओं को शांति एवं सद्गति प्रदान करें तथा परिवार को दुःख सहन करने की शक्ति दें।

■ **आचार्य डॉ. जयेन्द्र कुमार**

कोरोना के बाद अब ब्लैक फंगस

ब्लैक फंगस महामारी घोषित- दिल्ली सरकार ने ब्लैक फंगस संक्रमण को महामारी घोषित कर दिया। कोरोना मरीजों को म्यूकर माइकोसिस यानी ब्लैक फंगस के संक्रमण का सामना करना पड़ रहा है। दिल्ली में आज ब्लैक फंगस के 153 नए मामले दर्ज किए गए जिससे कुल मामलों की संख्या बढ़कर 773 हो गई। इसी को देखते हुए राज्य में ब्लैक फंगस एक वर्ष के लिए महामारी घोषित की गई है। दिल्ली सरकार के स्वास्थ्य निदेशालय द्वारा जारी आदेश में कहा गया है कि दिल्ली एपिडमिक डिजीज रेगुलेशन 2021 के तहत आज की तिथि से एक वर्ष तक ब्लैक फंगस को राजधानी में महामारी घोषित किया जा रहा है। दिल्ली के सभी निजी व सरकारी अस्पताल अब ब्लैक फंगस की स्क्रीनिंग व इलाज के दौरान केन्द्र सरकार के स्वास्थ्य विभाग, आईसीएमआर व दिल्ली सरकार की गाइडलाइन का पालन करेंगे। दिल्ली सरकार के स्वास्थ्य निदेशालय के आदेश में सभी निजी व सरकारी अस्पतालों से कहा गया है कि ब्लैक फंगस के संभावित मरीज या चिह्नित मरीज के बारे में अस्पताल के मेडिकल सुपरिंटेंडेंट दिल्ली सरकार के स्वास्थ्य विभाग को सूचित करेंगे। राष्ट्रीय राजधानी में ब्लैक फंगस के बढ़ते मामलों देखते हुए दिल्ली सरकार ने इस संबंध में अधिसूचना जारी की। इसमें कहा गया है कि राजधानी के सभी (सरकारी या निजी) अस्पताल ब्लैक फंगस के संदिग्ध या पुष्ट मामलों की जानकारी स्वास्थ्य विभाग को देंगे।

आर्यसमाज जीवित और उदात्त संस्था

आर्य कै. अशोक गुलाटी
प्रबंध संपादक

कोई भी समाज अपने आस-पास घट रही घटनाओं से उदासीन नहीं रह सकता/विशेषकर यदि वे घटनाएं राजनीति या सरकार से संबंध रखती हैं। यद्यपि आर्यसमाज एक धार्मिक-सामाजिक संगठन है, परन्तु इसकी 'धर्म' की परिभाषा विशद है, जिसमें मानव जीवन से संबंधित सभी पक्षों का सम्यक् समावेश रहता है।

आर्यसमाज जीवित और उदात्त संस्था है- अनेक राजनीतिक दल पनपते रहेंगे, मरते रहेंगे, अपना कलेवर बदलते रहेंगे। अनेक बाबा-गुरु-अवतार-भगवान्-माताएं आती रहेंगी, जाती रहेंगी, पर जो जितना ही स्वामी दयानन्द के दृष्टिकोण के निकट रहेगा, उतना ही आर्यसमाज का महत्व बढ़ता जायेगा। हिन्दुओं के अनेक रूप हमारे सामने आर्यसमाज का विरोध करने के लिए आये, पर वे चले नहीं, बदलते गये, क्योंकि ये मूर्त्तिपूजा, अवतारवाद, रूढियों, अन्धविश्वासों, वर्गभेदों, देशभेदों, जातिभेदों आदि पर निर्भर थे। आर्यसमाज के कार्यकर्त्ताओं को समझना चाहिए कि वे धरती के पुत्र हैं, सब नदियां उनके लिए एक-सी पवित्र हैं। उनको ईश्वर, ईश्वर के स्वरूप, ईश्वरीय-ज्ञान, ईश्वरीय-व्यवस्था और मानव-मात्र की श्रेष्ठता और समवेत कर्मठता में आस्था है- वे सत्य और ऋत् के उपासक हैं। इस स्वरूप का आर्यसमाज सदा जीवित रहेगा। आगे की मानवता न पैगम्बरों पर एक होने वाली है, न धर्म और न सम्प्रदायों पर, न मन्दिरों-मस्जिदों या गिरजों पर, वेद-वेदांगों पर ही एक होगी, भौतिक विज्ञान, रसायन शास्त्र, विकासवान् ज्ञान-विज्ञान के विविध शास्त्र (वेदांग-उपांग) समस्त मानव के एक होंगे। (भारतीय ज्योतिष, चीन देश की केमिस्ट्री, भारतीय रसायन, यूनान की ज्यामिति, इस प्रकार के भौगोलिक शब्द मिट जायेंगे)।

हमारे देश में एक प्राचीन प्रथा थी कि जब कोई व्यक्ति 'उपनिषद्' आदि उच्च विज्ञान का जिज्ञासु होता था, तो पहले उसके 'अधिकारी' होने का निश्चय किया जाता था। 'अधिकारी' का प्रश्न बड़ा आवश्यक और पवित्र है। कई बार इसे तुच्छ-सी बात समझा जाता है, परन्तु यदि ध्यान से देखा जाय तो ज्ञात होगा कि अधिकारी 'अनधिकारी' का प्रश्न प्राकृतिक सिद्धान्तों के सर्वथा अनुकूल है। एक बच्चा चार वर्ष का है। उसको अपने साथी की साधारण-सी चेष्टायें की बड़ी मधुर अनुभव होती हैं।

इनकी विचारशक्ति परस्पर समान है, इसलिये वे परस्पर मिलना और बातें करना चाहते हैं। उन्हें बहुत वीरतापूर्ण प्रतीत होता है। दो-चार वर्ष पश्चात् इसी गेंद जैसी तुच्छ बातों से उनकी रुचि हट जाती है। अब वे रेत या पत्थरों के छोटे-छोटे मकान बनाने में रुचि दिखाते हैं, ठीकरों और कंकरों से वे खेलना चाहते हैं। फिर कुछ वर्ष पश्चात् उनकी रुचि शारीरिक खेलों की ओर हो जाती है और पुराने खेलों को अब वे बेहूदा बताने लगते हैं।

युवावस्था में उन्हें गृहस्थ की समझ उत्पन्न हो जाती है और अब सांसारिक कार्यों में उलझ जाते हैं। धीरे-धीरे उनके मन में इस संसार से विराग और धर्म में प्रवृत्ति का आविर्भाव होता है और त्याग व बलिदान के सिद्धांतों को समझने की शक्ति उत्पन्न होती है। इससे यह स्पष्ट है कि प्रत्येक सिद्धांत को समझने के लिये 'अधिकारी' होना आवश्यक है। आज की किसी भी सभा में-चाहे वह धार्मिक हो या राजनैतिक, 90 प्रतिशत श्रोताओं को वक्ता की बातों में रस नहीं आता। बच्चों या बच्चों के से स्वभाव वाले बड़े-बूढ़ों को भी वही बात पसंद आती है, जिस पर लोग हसें या तालियां पीट दें, अतएव अनधिकारी के सन्मुख ऊंचे सिद्धान्तों का वर्णन करना भी प्रायः हानिकारक होता है।

जब किसी जाति या राष्ट्र में उन्नति की अभिलाषा उत्पन्न हो तो इसको कार्य रूप में परिणत करने का प्रथम आवश्यक साधन उसके व्यक्तियों के आचरण की दृढ़ता है। चरित्र जितना अधिक उच्च और भला होगा, उतनी ही शीघ्रता से उच्च और भले विचार बद्धमूल होंगे। 'चरित्र' के खेत को भली भांति तैयार किये बिना उच्च विचार रूपी बीज बिखेरना, ऊसर भूमि में बीज फेंकने के समान ही व्यर्थ होगा।

■■■

■ **हर दुःख के समय के बाद सुख का समय अवश्य आता है, बस धैर्य, साहस और सत्कर्म का साथ कभी नहीं छोड़ना। घर पर रहिए, सुरक्षित रहिए। दो गज दूरी एवं डबल मास्क है जरूरी॥**

सत्यार्थ प्रकाश के समुल्लास का संक्षिप्त विवरण

सत्यार्थ प्रकाश ज्ञान

हमने सत्यार्थ प्रकाश का नाम अनेकों बार सुना है और हमारे बहुत से हिन्दू युवाओं और युवतियों को इसके बारे में जानने की जिज्ञासा सदा बनी रहती है- सत्यार्थ प्रकाश में कुल 14 समुल्लास हैं। जिनमें से पहले 10 तो वेद आधारित वैदिक धर्म के मंडन पर लिखे हैं और शेष 4 अवैदिक मत मतांतरों के खंडन पर लिखे गए हैं। ये 14 समुल्लास इस प्रकार हैं-

प्रथम समुल्लास : इस पूरे ब्रह्माण्ड में ईश्वर से सर्वश्रेष्ठ और कोई नहीं है ईश्वर ने ही मनुष्यों की हर प्रकार की उन्नति के लिये वेद में पूरे ब्रह्माण्ड का ज्ञान विज्ञान दिया है। उसी ईश्वर का सर्वश्रेष्ठ नाम 'ओ३म्' है और वेद में इसी एक ईश्वर के बहुत सारे नाम हैं जैसे कि रुद्र, मित्र, शिव, विष्णु, प्रजापति, इन्द्र, सूर्य, वरुण, सोम, पर्वत, लक्ष्मी, सरस्वति आदि। तो इस समुल्लास में ऋषि दयानन्द ने ऐसे मुख्य अत्यन्त प्रसिद्ध 100 नामों की व्याख्या की है। ईश्वर के स्वरूप के बारे में सबकी शंकाओं का समाधान हो जाए।

द्वितीय समुल्लास : इस समुल्लास में संतानों की शिक्षा के बारे में लिखा गया है क्योंकि बिना शिक्षित हुए मनुष्य पशु के समान होता है। हम मनुष्य में तो स्वाभाविक व्यवहार भी बिना शिक्षा के नहीं आता है। इसी कारण बिना विद्या के मनुष्य अनेकों छल-कपट भूत पिशाच, चुड़ैल आदि में मिथ्या विश्वास और उनको दूर करने का ढोंग करने वाले पाखंडियों के जाल में फंसकर अपने धन, सम्मान, ऊर्जा, समय आदि नष्ट करते हैं। तभी ऋषि ने ये लिखा है कि जो मनुष्य अपनी संतानों को सुशिक्षित नहीं करते वे अपनी संतानों के परम शत्रु हैं।

तृतीय समुल्लास : इस समुल्लास में ऋषि ने पठन-पाठन की व्यवस्था पर प्रकाश डाला है। कि पढ़ना-लिखना किस प्रकार का होना चाहिए। गुरुकुल शिक्षा प्रणाली, प्रमाणों के आधार पर परीक्षा करके सत्य और असत्य को जानना, पढ़ने योग्य वेद और आर्ष ग्रंथ, त्याग करने योग्य शुद्र ग्रंथ, ब्रह्मचर्य की अवधी, गायत्री महामंत्र के अर्थ सहित जाप की विधी, प्राणायाम के चार प्रकार, आचमन सहित संध्योपासना, यज्ञ अग्निहोत्र समेत पंच महायज्ञ (ब्रह्मयज्ञ, देवयज्ञ, बलिवैश्वदेवयज्ञ, पितृयज्ञ, अतिथियज्ञ)। इन विषयों पर प्रकाश डाला है जो कि मनुष्य को सुशिक्षित करने हेतु हैं। यही वो शिक्षा है जिससे कि हमारे आर्यावर्त देश में राम, कृष्ण, जैमिनी, अहिल्या, कणाद, कपिल, गौतम, भरद्वाज, आग्रगायण, सीता, सावित्री, रुक्मिणी, पतंजली, पाणीनि आदि उत्पन्न हुए हैं।

चतुर्थ समुल्लास : जैसा कि कहा गया है कि चारों आश्रमों में गृहस्थाश्रम सर्वोत्तम माना गया है। क्योंकि ये आश्रम ही बाकी के तीनों आश्रमों का पोषण करता है। इसलिए इसमें विवाह और उसके 8 प्रकारों पर प्रकाश डाला गया है। विवाह किन किन स्त्री पुरुषों का होना चाहिए? किनका विवाह उत्तम होता है? किन-किन को विवाह करने का अधिकार नहीं है? उत्तम गुणों वाली संतानें कैसे उत्पन्न हो सकती हैं? विवाह करने में किन गुणों और दोषों को विचारना चाहिए? विधवा विवाह।

पञ्चम समुल्लास : हमारी संस्कृति के आधार हमारे चार वर्णाश्रम हैं। हमारे जीवन की तीन चौथाई भाग वन में बीतता था, जिनमें अंतिम दो यानी कि वानप्रस्थ और संन्यास जिनमें प्रत्येक मनुष्य को वन में रहकर समाज के हित में कार्य करना होता है। जब तक वानप्रस्थ और सन्यास की परम्परा हमारे देश में रही तब तक हमारे देश को तपस्वी वेद प्रचारक, गुरु शिक्षक आदि प्राप्त होते रहे लेकिन जब से ये सब बंद हुआ। बुढ्ढे होकर रिटायर होकर घर में व्यर्थ बैठ पोते पोतियों के मोह में बेटे-बहु के ताने सुनकर पारिवारिक माहौल खराब किया और समाज को भी कोई लाभ न हुआ।

षष्ठ समुल्लास : इसमें ऋषि ने मनुस्मृति आधारित राजतंत्र विषय पर लिखा है। क्योंकि जब तक हमारे देश में ऋषियों ने राजतंत्र रखा तब तक हमारा देश पूरे विश्व में चक्रवर्ती शासन करने में अत्यन्त समर्थ था और पूरी दुनिया को एकजुट करते हुए वैदिक धर्म के अधीन रखकर सुख और शांती बनाए रक्खी। पूरे विश्व में कभी आर्यों का चक्रवर्ती शासन था जब से मनु का राजतंत्र लुप्त हुआ तब से आर्य शासन खंडित होता गया और पूरी पृथिवी पर से वैदिक धर्म घटता गया। क्योंकि मनुस्मृति में राजा के कर्तव्य, उसकी दिनचर्या, शिक्षा, प्रजा से संवाद, दान, वर्णव्यवस्था की रक्षा और राज्य में

योजनाएं आदि लागू करवाना आदि लिखा है। इसी के प्रमाण मनुस्मृति से देकर ऋषि दयानंद ने मनु के राजतंत्र को सुदृढ़ करके देश को वही आर्यावर्त बनाने के संकल्प से लिखा था।

सप्तम समुल्लास : इस समुल्लास में ऋषि दयानन्द जी ने वेद और ईश्वर विषय पर लिखा है। क्योंकि आदिकाल में सृष्टि की रचना करके ईश्वर ने हम मनुष्यों की मानसिक, शारीरिक, आध्यात्मिक, सामाजिक हर प्रकार की उन्नति करने के लिये वेद का ज्ञान चार उत्कृष्ट ऋषियों के द्वारा दिया जिन्होंने आगे ब्रह्मा ऋषि और फिर आगे गुरु-शिष्य परम्परा में ये ज्ञान मनुष्य जाति में फैलता गया। इस समुल्लास में ऋषि दयानन्द जी ने अनेकों वेदमंत्र और कई दर्शन शास्त्रों के प्रमाण देकर ईश्वर के स्वरूप को सिद्ध किया है तांकि किसी को ईश्वर के विषय में कोई शंका न रहे।

अष्टम समुल्लास : यह आठवां समुल्लास सृष्टि के त्रैतवाद विषय पर लिखा गया है । क्योंकि यह सृष्टि तीन कारणों से उत्पन्न हुई है। जिस कारण इनको क्रम से भी कहा गया है। इस त्रैतवाद विषय को सरल ढंग से समझाने के लिये ऋषि ने इसमें वेदमंत्रों के प्रमाण दिए हैं क्योंकि ईश्वर की रचना को ईश्वरीय ज्ञान वेद ही समझाने में समर्थ है और उसके आधार पर ऋषियों द्वारा लिखे तर्क शास्त्र भी इस रचना को समझने में सहायक होते हैं।

नवम समुल्लास : इसमें ऋषि ने बंधन और मुक्ति अर्थात् मोक्ष के विषय में लिखा है। तांकि मनुष्य पातंजल योगशास्त्र के अनुसार ईश्वरोपासना करके अपने अंदर का मिथ्याज्ञान नष्ट कर तत्वज्ञान प्राप्त कर ले। इसी को समझाने के लिये ऋषि ने ब्रह्म तत्व, उसके ज्ञान, बल, सामर्थ्य आदि को समझाते हुए बंधन के कारण और उसके नाश करने की विधी को संक्षेप में इस समुल्लास में लिखा है।

दशम समुल्लास : कोई भी मनुष्य समाज में उत्तम व्यवहार किए बिना सुख को प्राप्त नहीं हो सकता। कम पढ़ा-लिखा मनुष्य भी उचित व्यवहार करके समाज में सम्मान का पात्र बन जाता है तो दूसरी ओर अधिक पढ़ा लिखा भी अनुचित व्यवहार करके अपमानित और तिरस्कृत होता है। इसी लिये ऋषि ने मनुष्यों को उत्तम व्यवहार और भक्ष्य एवं अभक्ष्य विषय में शिक्षा देते हुए ये समुल्लास लिखा है।

एकादश समुल्लास : महाभारत काल से पहले तक पूरे विश्व में केवल वैदिक धर्म ही फैला हुआ था और हमारा देश आर्यावर्त पूरी दुनिया का केंद्र था। हमारे आर्य राजाओं का चक्रवर्ती शासन था पूरी दुनिया के राजा हमारे देश को कर देते थे। हमारे वेद प्रचारक ऋषि-मुनि पूरे विश्व में वेद प्रचार को जाते थे। महाभारत के भीषण युद्ध में हमारे प्रचारक मारे गए और पूरा विश्व वेद की शिक्षा से रहित हो गया हमारा देश आर्यावर्त भी इससे अछूता न रहा। वेद शिक्षा से विरुद्ध कई कपोल्कल्पित मत पंथ आर्यावर्त में चल पड़े और इन मत मतांतरों की कई शाखाएं और प्रतिशाखाएं फूट निकलीं। जिसने कि हमारे आर्यावर्त में मनुष्यों के बीच में कई लकीरें खींच डालीं, वर्णव्यवस्था विकृत होकर जातिवाद में बदल गई।

द्वादश समुल्लास : ये समुल्लास भारत में पनपे वेद विरोधी नास्तिक बौद्धमत, जैनमत, चारवाक आदि के खंडन में है क्योंकि आर्यावर्त में बाकी जितने मत मंतातर पैदा हुए उनमें से अधिकांश तो ईश्वर और वेद को आंशिक रूप में किसी न किसी रूप में मानते थे परंतु ये जैन, बौद्ध मत तो नितांत नास्तिक और उग्र वेद विरोधी मत थे।

त्रयोदश समुल्लास : भारत में अंग्रेजों ने वैटिकन के ईशारे पर यहां की हिन्दू जनता को ईसाई बनाने के लिये जी तोड़ प्रयास किए। इसलिये यहां ग्रामीण अनपढ़ लोगों को ईसाई बनाने हेतु ये ईसाई पादरी और पास्टर गांव-गांव बाईबल लेकर घूमा करते थे और हिन्दू देवी-देवताओं की निंदा करते और यीशू मसीह की महानता बताते रहते थे। इस कार्य के लिये अंग्रेजों द्वारा पानी की तरह पैसा बहाया जा रहा था। ऋषि दयानन्द जी ने इनकी मान्य पुस्तक बाईबल उठाकर उसकी चुनिंदा आयतों की समीक्षा की और बाईबल का जंगलीपन, निकृष्टता को लोगों के सामने खोलकर रखा और ये सिद्ध किया कि विदेश में पनपा ईसाई मत भारत के लोगों के योग्य नहीं है।

चतुर्दश समुल्लास : अरब में पनपी इस्लाम की विचारधारा शुरू से ही हिंसा पर आधारित रही है। इस्लाम के संस्थापक पैगम्बर माने जाने वाले मुहम्मद साहब हैं जिन्होंने मक्का में जन्म लिया था। उनके अनुयायीयों और खलीफाओं ने अरबी साम्राज्य के विस्तार के उद्देश्य से इस्लाम को मजहब यानी की एक संप्रदाय बनाया। इस्लाम में अनेकों प्रकार के फिरके हैं। ऋषि दयानन्द ने इस समुल्लास मे लगभग 200 से ऊपर कुरान की आयतें उठाकर उनकी समीक्षा और समझने का प्रयास किया। सत्यार्थ प्रकाश का खंडन लिखने की भूल करने वाले बहुत से मौलवी और मुफ्ती स्वयं ही वेद की विचारधारा से प्रभावित होकर इस्लाम छोड़ बैठे और शुद्धि करवाकर वेद प्रचारक तक बन गए। ○○

मातृ दिवस पर पन्ना धाय के बलिदान की कहानी

सत्य नारायण गोयनका

चित्तौड़गढ़ के इतिहास में जहां पद्मिनी के जौहर की अमर-गाथाएं, मीरा के भक्तिपूर्ण गीत गूंजते हैं वहीं पन्नाधाय जैसी मामूली स्त्री की स्वामीभक्ति की कहानी भी अपना-अलग स्थान रखती हैं।

बात तब की है, जब चित्तौड़गढ़ का किला आंतरिक विरोध व षड्यंत्रों में जल रहा था। मेवाड़ का भावी राणा उदय सिंह किशोर हो रहा था। तभी उदय सिंह के पिता के चचेरे भाई बनवीर ने एक षड्यंत्र रचकर उदय सिंह के पिता की हत्या महल में ही करवा दी तथा उदय सिंह को मारने का अवसर ढूंढने लगा। उदयसिंह की माता को संशय हुआ तथा उन्होंने उदय सिंह को अपनी खास दासी व उदय सिंह की धाय पन्ना को सौंप कर कहा कि 'पन्ना अब यह राजमहल व चित्तौड़ का किला इस लायक नहीं रहा कि मेरे पुत्र तथा मेवाड़ के भावी राणा की रक्षा कर सके, तू इसे अपने साथ ले जा, और किसी तरह कुम्भलगढ़ भिजवा दे।'

पन्ना धाय राणा सांगा के पुत्र राणा उदयसिंह की धाय मां थीं। पन्ना धाय किसी राजपरिवार की सदस्य नहीं थीं। अपना सर्वस्व स्वामी को अर्पण करने वाली वीरांगना पन्नाधाय का जन्म कमेरी गांव में हुआ था। राणा सांगा के पुत्र उदय सिंह को मां के स्थान पर दूध पिलाने के कारण पन्ना 'धाय मां' कहलाई थी। पन्ना का पुत्र चंदन और राजकुमार उदयसिंह साथ-साथ बड़े हुए थे। उदयसिंह को पन्ना ने अपने पुत्र के समान पाला था। पन्नाधाय ने उदयसिंह की मां रानी कर्मावती के

सामूहिक आत्म बलिदान द्वारा स्वर्गारोहण पर बालक की परवरिश करने का दायित्व संभाला था। पन्ना ने पूरी लगन से बालक की परवरिश और सुरक्षा की। पन्ना चित्तौड़ के कुम्भा महल में रहती थी।

चित्तौड़ का शासक, दासी का पुत्र बनवीर बनना चाहता था। उसने राणा के वंशजों को एक-एक कर मार डाला। बनवीर एक रात महाराजा विक्रमादित्य की हत्या करके उदयसिंह को मारने के लिए उसके महल की ओर चल पड़ा। एक विश्वस्त सेवक द्वारा पन्ना धाय को इसकी पूर्व सूचना मिल गई। पन्ना राजवंश और अपने कर्तव्यों के प्रति सजग थी व उदयसिंह को बचाना चाहती थी। उसने उदयसिंह को एक बांस की टोकरी में सुलाकर उसे झूठी पत्तलों से ढंककर एक विश्वास पात्र सेवक के साथ महल से बाहर भेज दिया।

बनवीर को धोखा देने के उद्देश्य से अपने पुत्र को उदयसिंह के पलंग पर सुला दिया। बनवीर रक्तरंजित तलवार लिए उदयसिंह के कक्ष में आया और उसके बारे में पूछा। पन्ना ने उदयसिंह के पलंग की ओर संकेत किया जिस पर उसका पुत्र सोया था। बनवीर ने पन्ना के पुत्र को उदयसिंह समझकर मार डाला। पन्ना अपनी आंखों के सामने अपने पुत्र के वध को अविचलित रूप से देखती रही। बनवीर को पता न लगे इसलिए वह आंसू भी नहीं बहा पाई। बनवीर के जाने के बाद अपने मृत पुत्र की लाश को चूमकर राजकुमार को सुरक्षित स्थान पर ले जाने के लिए निकल पड़ी। स्वामिभक्त वीरांगना पन्ना धन्य हैं! जिसने अपने कर्तव्य-पूर्ति में अपनी आंखों के तारे पुत्र का बलिदान देकर मेवाड़ राजवंश को बचाया।

पुत्र की मृत्यु के बाद पन्ना उदय सिंह को लेकर बहुत दिनों तक सप्ताह शरण के लिए भटकती रही पर दुष्ट बनबीर के खतरे के डर से कई राजकुल जिन्हें पन्ना को आश्रय देना चाहिए था, उन्होंने पन्ना को आश्रय नहीं दिया। पन्ना जगह-जगह राजद्रोहियों से बचती, कतराती तथा स्वामिभक्त प्रतीत होने वाले प्रजाजनों के सामने अपने को जाहिर करती भटकती रही। कुम्भलगढ़ में उसे यह जाने बिना कि उसकी भवितव्यता क्या है शरण मिल गयी। उदय सिंह किलेदार का भांजा बनकर बड़ा हुआ। तेरह वर्ष की आयु में मेवाड़ी उमरावों ने उदयसिंह को अपना राजा स्वीकार कर लिया और उसका राज्याभिषेक कर दिया। उदय सिंह 1542 में मेवाड़ के वैधानिक महाराणा बन गए।

आईये उस महान वीरता से परिपूर्ण पन्ना की कहानी को इस कविता के माध्यम से समझते है-

"

चल पड़ा दुष्ट बनवीर क्रूर, जैसे कलयुग का कंस चला
राणा सांगा के, कुम्भा के, कुल को करने निर्वंश चला॥

उस ओर महल में पन्ना के कानों में ऐसी भनक पड़ी
वह भीत मृगी सी सिहर उठी, क्या करे नहीं कुछ समझ पड़ी॥

तत्क्षण मन में संकल्प उठा, बिजली चमकी काले घन पर
स्वामी के हित में बलि दूंगी, अपने प्राणों से भी बढ़ कर॥

पन्न नाई की कुंडी में, झटपट राणा को सुला दिया
ऊपर झूठे पत्तल रख कर, यों छिपा महल से पार किया॥

फिर अपने नन्हें-मुन्ने को, झट गुदड़ी में से उठा लिया
राजसी वस्त्र-भूषण पहना, फौरन पलंग पर लिटा दिया॥

इतने में ही सुन पड़ी गरज, है उदय कहां, युवराज कहां
शोणित प्यासी तलवार लिये, देखा कातिल था खड़ा वहां॥

पन्ना सहमी, दिल झिझक उठा, फिर मन को कर पत्थर कठोर
सोया प्राणों-का-प्राण जहां, दिखला दी उंगली उसी ओर॥

छिन में बिजली-सी कड़क उठी, जालिम की ऊंची खड्ग उठी
मां-मां मां-मां की चीख उठी, नन्हीं सी काया तड़प उठी॥

शोणित से सनी सिसक निकली, लोहू पी नागन शांत हुई
इक नन्हा जीवन-दीप बुझा, इक गाथा करुण दुखांत हुई॥

जब से धरती पर मां जनमी, जब से मां ने बेटे जन्मे
ऐसी मिसाल कुर्बानी की, देखी न गई जन-जीवन में॥

तू पुण्यमयी, तू धर्ममयी, तू त्याग-तपस्या की देवी
धरती के सब हीरे-पन्ने, तुझ पर वारें पन्ना देवी॥

तू भारत की सच्ची नारी, बलिदान चढ़ाना सिखा गयी
तू स्वामिधर्म पर, देशधर्म पर, हृदय लुटाना सिखा गयी॥

"

■■■

इच्छाओं को कम करें

छोटा बालक अज्ञानी होता है। उसे संसार का अनुभव नहीं होता। उसमें पूर्व जन्म के संस्कार तो होते हैं। उन्हीं संस्कारों से उसमें इच्छाएं उत्पन्न होती हैं, और वर्तमान में भी खिलौने आदि कुछ वस्तुओं को देखने से उसकी इच्छाएं उत्पन्न होती रहती हैं। इसी प्रकार से वह दूसरे बच्चों के पास रंग-बिरंगे अनेक खिलौने देखता है। उन खिलौनों को देखकर भी, उन खिलौनों को प्राप्त करने की, उसकी इच्छा हो जाती है। वह सोचता है कि- यह खिलौना बहुत अच्छा है। बहुत सुखदायक है, मुझे यह खिलौना चाहिए। वह उस खिलौने से खेलता है। थोड़ी देर में उससे ऊब जाता है। अब उसे दूसरा खिलौना चाहिए। कुछ देर में वह उससे भी ऊब जाता है। फिर उसे ढेर सारे खिलौने चाहिए। जैसे-जैसे आयु बढ़ती जाती है, युवा अवस्था आ जाती है, तब तक बहुत सी इच्छाएं वह उत्पन्न कर लेता है। उनको पूरा करने का प्रयत्न भी करता है। परंतु सभी जानते हैं कि किसी भी व्यक्ति की भौतिक सुख भोगने की सारी इच्छाएं आज तक पूरी नहीं हुई। फिर भी लोग अविद्या के कारण अपनी इच्छाओं को पूरा करने में लगे रहते हैं। और यह सोचते हैं, कि एक दिन तो हमारी सब इच्छाएं पूर्ण हो जाएंगी।

इसी प्रकार से जीवन आगे चलता जाता है। आयु बढ़ती जाती है, 50-60 वर्ष की उम्र हो जाने पर भी, इच्छाएं तो थमने का नाम नहीं ले रही। वे तो बढ़ती ही जा रही हैं। परंतु लोग अब भी ध्यान नहीं दे रहे, कि हम इच्छाओं को मन में लिए वहीं खड़े हैं, जबकि आयु बढ़ रही है। वह समाप्ति की ओर है। अब यह बात किसी किसी व्यक्ति को कुछ-कुछ समझ में आने लगी, कि सारी इच्छाएं पूरी नहीं होंगी। अब तो भौतिक सुख भोगने की इच्छाओं को छोड़कर कुछ प्रभु भजन कर लिया जाए। फिर भी प्राय: लोग ऐसा नहीं सोचते। ऋषि लोग हमें समझाते हैं कि सब संसार देख लिया। अब तो मोह माया राग द्वेष को छोड़ो। कुछ भगवान की भक्ति कर लो। ईश्वर का ध्यान चिंतन मनन कर लो। कुछ यज्ञ सेवा परोपकार दानादि शुभ कर्म कर लो। कुछ पुण्य कमाकर अगले जन्म की भी सुरक्षा कर लो। तो हमें ऋषियों की बात पर ध्यान देना चाहिए। अपनी इच्छाओं को कम कर के कुछ सेवा परोपकार दान दया ईश्वर उपासना आदि शुभ कर्मों की ओर भी कदम बढ़ाने चाहिए, तभी हमारा जीवन सफल हो पाएगा।

➲➲ **स्वामी विवेकानंद परिव्राजक**

वैदिक धर्म के पुनरुद्धार में ऋषि दयानन्द और आर्यसमाज का योगदान

मनमोहन कुमार आर्य
देहरादून, उत्तराखंड

भारतीय धर्म व संस्कृति विश्व की प्राचीनतम, आदिकालीन, सर्वोत्कृष्ट, ईश्वरीय ज्ञान वेद और सत्य मान्यताओं व सिद्धांतों पर आधारित है। सारे विश्व में यही संस्कृति महाभारत काल व उसकी कई शताब्दियों बाद तक भी प्रवृत्त रहने सहित सर्वत्र फलती-फूलती रही है। इस संस्कृति की विशेषता का प्रमुख कारण यह था कि यह ईश्वरीय ज्ञान वेद पर आधारित होने के साथ वेदों के प्रचारक व रक्षक ईश्वर के साक्षात्कृत धर्म हमारे ऋषि मुनियों द्वारा प्रचारित व संरक्षित थी। महाभारत के विनाशकारी युद्ध के प्रभाव से ऋषि परम्परा समाप्त हो गई जिससे संसार में धर्म व संस्कृति सहित शिक्षा के क्षेत्र में घोर अंधकार छा गया। इस विषम परिस्थिति में देश-देशान्तर में वही हुआ जैसा कि नेत्रान्ध व अल्प नेत्र ज्योति वाले अशिक्षित व्यक्तियों के कार्य होते हैं। यह अंधकार समाप्त नहीं हो रहा था अपितु समय के साथ बढ़ रहा था।

इस स्थिति में हम देखते हैं कि देश-देशान्तर में कुछ महापुरुषों का जन्म हुआ जिन्होंने समाज को नई दिशा देने के लिए सामयिक ज्ञान की अपनी योग्यतानुसार अपने-अपने मत व धर्म प्रचलित किये और इन्हीं मत व धर्मों के पालन के लिए उन-उन देशों में, मुख्यत: यूरोप व अरब आदि देशों में, वहां की भौगोलिक एवं समाज के पुरुषों की योग्यता के अनुसार मत व संस्कृति का प्रादुर्भाव व विकास हुआ। भारत तथा विश्व में सृष्टि के आदि काल से लेकर महाभारत काल तक वैदिक धर्म व संस्कृति प्रचलित रही थी। समाज में अज्ञान बढ़ जाने से इसका विपरीत प्रभाव धर्म व संस्कृति दोनों पर हुआ जिस कारण संस्कृति का स्वरूप भी सत्य के विपरीत अज्ञान प्रधान होकर अनेक विकारों से युक्त हुआ।

संस्कृति का अध्ययन करने के लिए हमें धर्म, भाषा, स्वदेश गौरव की भावना, वेषभूषा, परम्परा व रीति-रिवाजों आदि की स्थिति पर विचार और इसमें महर्षि दयानन्द और आर्यसमाज के योगदान की चर्चा करना उपयुक्त होगा। धर्म के क्षेत्र में भारत सृष्टि के आदि काल से वेद और वैदिक मान्यताओं व सिद्धांतों का पालक रहा है। वेद ईश्वरीय ज्ञान होने के कारण सत्य मान्यताओं, यथार्थ धर्म व संस्कृति के पोषक रहे हैं। हमारे ऋषि-मुनि भी विचार, चिंतन, ध्यान व मनन द्वारा वेदों के सभी मंत्रों व शब्दों में निहित मनुष्यों के लिए कल्याणकारी अर्थों व ज्ञान से देश की जनता को उपकृत करते थे जिससे सारा समाज व देश सत्य ज्ञान से युक्त व उन्नत था। गुरुकुलीय शिक्षा प्रणाली से सभी मनुष्यों व वर्णों की संतानों को गुरुकुलीय शिक्षा दी जाती थी जहां निर्धन व धनवानों के लिए वेद-वेदांगों के ज्ञान कराने वाली शिक्षा का सबके

महाभारत के विनाशकारी युद्ध के प्रभाव से ऋषि परम्परा समाप्त हो गई जिससे संसार में धर्म व संस्कृति सहित शिक्षा के क्षेत्र में घोर अंधकार छा गया। इस विषम परिस्थिति में देश-देशान्तर में वही हुआ जैसा कि नेत्रान्ध व अल्प नेत्र ज्योति वाले अशिक्षित व्यक्तियों के कार्य होते हैं। यह अंधकार समाप्त नहीं हो रहा था अपितु समय के साथ बढ़ रहा था। इस स्थिति में हम देखते हैं कि देश-देशान्तर में कुछ महापुरुषों का जन्म हुआ जिन्होंने समाज को नई दिशा देने के लिए सामयिक ज्ञान की अपनी योग्यतानुसार अपने-अपने मत व धर्म प्रचलित किये और इन्हीं मत व धर्मों के पालन के लिए उन-उन देशों में, मुख्यतः यूरोप व अरब आदि देशों में, वहां की भौगोलिक एवं समाज के पुरुषों की योग्यता के अनुसार मत व संस्कृति का प्रादुर्भाव व विकास हुआ। भारत तथा विश्व में सृष्टि के आदि काल से लेकर महाभारत काल तक वैदिक धर्म व संस्कृति प्रचलित रही थी। समाज में अज्ञान बढ़ जाने से इसका विपरीत प्रभाव धर्म व संस्कृति दोनों पर हुआ जिस कारण संस्कृति का स्वरूप भी सत्य के विपरीत अज्ञान प्रधान होकर अनेक विकारों से युक्त हुआ।

लिए समान रूप से निःशुल्क प्रबंध था। स्वामी दयानन्द ने प्रत्येक व्यक्ति के लिए शिक्षा को अनिवार्य करने की बात कही है। कृष्ण व सुदामा एक साथ पढ़ते थे और परस्पर मित्रवत् व्यवहार करते थे। वैदिक काल के सभी आचार्य व गुरु भी वैदिक ज्ञान के प्रबुद्ध विद्वान होते थे जिनके आचार्यत्व में विद्यार्थियों से नास्तिकता का नाश होकर एक सच्चे सच्चिदानन्द, निराकार, सर्वशक्तिमान, सर्वव्यापक, सर्वांतर्यामी, न्यायकारी, दयालु व सृष्टिकर्ता ईश्वर की उपासना देश देशान्तर में प्रचलित थी।

सभी स्त्री व पुरुष स्वाध्यायशील व योगाभ्यासी होते थे जिससे सभी स्वस्थ, सुखी, अपरिग्रही व संतोषी होते थे। समाज व देश में ऋषि-मुनियों की बड़ी संख्या होने से कहीं कोई अज्ञान व अंधविश्वास उत्पन्न व प्रचलित नहीं होता था। शंका होने पर राजाओं के द्वारा बड़े-बड़े शास्त्रार्थों का आयोजन होता था और विजयी पक्ष के विचारों को समस्त देश को स्वीकार करना पड़ता था। धर्मनिरपेक्षता जैसा शब्द महाभारत काल तक व उसके बाद के साहित्य में कहीं नहीं पाया जाता। इस प्रकार सर्वत्र वैदिक धर्म का पालन होता था। महाभारत काल के बाद मध्यकाल में अज्ञान व अंधविश्वासों के उत्पन्न हो जाने से धर्म का सत्य स्वरूप विकृत हो गया जिससे समाज में अवतारवाद, मूर्तिपजा, मृतक श्राद्ध, फलित ज्योतिष, पाखंड व आडंबर, जन्मना जातिवाद आदि मिथ्या विश्वास उत्पन्न हो गये। महर्षि दयानन्द 1825-1883 तक इन मिथ्या विश्वासों में वृद्धि होती रही।

स्वामी दयानन्द जी को 1938 की शिवरात्रि को ईश्वर विषयक बोध प्राप्त हुआ। इसके कुछ काल बाद उनसे छोटी बहिन व चाचा की मृत्यु ने उनमें वैराग्य के संस्कारों को उत्पन्न किया। उन्होंने सत्य धर्म व संस्कृति की खोज के लिए 1846 में माता-पिता व स्वगृह का त्याग कर देश भर के धार्मिक विद्वानों, शिक्षकों व योगियों को ढूंढकर उनकी संगति व शिष्यत्व प्राप्त किया। मथुरा के प्रज्ञाचक्षु गुरु स्वामी विरजानंद सरस्वती के पास वह सन् 1860 में पहुंचे और उनसे तीन वर्षों में संस्कृत के आर्ष व्याकरण अष्टाध्यायी-महाभाष्य व निरुक्त संस्कृत-व्याकरण प्रणाली का ज्ञान प्राप्त कर समस्त वैदिक व इतर धार्मिक साहित्य के विद्वान बने। गुरु की प्रेरणा से उन्होंने संसार से मिथ्या ज्ञान नष्ट करने के साथ आर्ष ज्ञान व सत्य सनातन वैदिक मत एवं संस्कृति के प्रचार व स्थापना का कार्य किया। इस कार्य को सम्पादित करने के लिए ही उन्होंने देश का भ्रमण कर न केवल धर्मोपदेश व शास्त्रार्थ आदि ही किये अपितु आर्यसमाज की स्थापना सहित पंचमहायाविधि, सत्यार्थप्रकाश, ऋग्वेदादि भाष्य-भूमिका, संस्कारविधि, आर्याभिविनय आदि ग्रन्थों का प्रणयन किया और साथ हि चारों वेदों का संस्कृत व हिन्दी में भाष्य का अभूतपूर्व महनीय कार्य भी आरम्भ किया। वह यजुर्वेद का पूर्ण व ऋग्वेद का आंशिक भाष्य ही कर पाये। उनके इन कार्यों ने धर्म व संस्कृति के सुधार व उन्नति का अपूर्व कार्य किया।

सत्यार्थप्रकाश ग्रन्थ लिखकर व उसमें देश देशान्तर के प्रायः सभी मतों की समीक्षा कर वैदिक सनातन मत को वास्तविक व यथार्थ धर्म सिद्ध व घोषित किया। उनकी चुनौती उनके जीवनकाल व बाद में भी कोई स्वीकार नहीं कर सका जिस कारण से आज भी वेद धर्म सर्वोपरि महान व संसार के सभी लोगों के लिए आचरणीय बन गया है। महर्षि दयानन्द के समय व उनसे पूर्व ईसाई व इस्लाम के अनुयायी हिन्दुओं के धर्म-परिवर्तन का आंदोलन चलाये हुए थे। बहुत बड़ी संख्या में उन्होंने सफलता भी प्राप्त की थी परंतु स्वामी दयानन्द के कार्यों ने उनके धर्मांतरण के कार्य पर प्रायः पूर्ण विराम लगा दिया।

महर्षि दयानन्द एवं आर्यसमाज के बारे में महापुरुषों के विचार

- स्वामी जी ऐसे विद्वान और श्रेष्ठ व्यक्ति थे, जिनका अन्य मतावलम्बी भी सम्मान करते थे।

- सर सैयद अहमद खा

- महर्षि दयानन्द इतनी बड़ी हस्ती हैं कि मैं उनके पांव के जूते के फीते बाधने लायक भी नहीं।

- ए .ओ. ह्यूम

- ऋषि दयानन्द का प्रादुर्भाव लोगों को कारागार से मुक्त कराने और जाति बंधन तोड़ने के लिए हुआ था। उनका आदर्श है-आर्यावर्त! उठ, जाग, आगे बढ़। समय आ गया है, नये युग में प्रवेश कर।

- फ्रेंच लेख रिचर्ड

- आदि शंकराचार्य के बाद बुराई पर सबसे निर्भीक प्रहारक थे स्वामी महर्षि दयानन्द।

- मदाम ब्लेवेट्स्की

कोरोना टीके से जुड़ी वह भूल जिसने आपको आत्महंता बनाया

डॉ. कविता वाचक्नवी

भारत में कोरोना बहुत विकराल अवस्था में है। वहां उसके विकराल होने के चार मुख्य कारण हैं। उनका उल्लेख करना इसलिए अनिवार्य लग रहा है क्योंकि उनमें से तीन अभी भी आमजन हेतु आत्मरक्षा में प्रासंगिक हैं।

- अनुशासनहीनता, आत्म-नियंत्रण का अभाव।
- कोरोना को राजनीति का हथियार समझ कर प्रयोग करने वालों द्वारा जन-मानसिकता-निर्माण की कुचाल।
- नीम-हकीमी वाला दम्भ।
- वैक्सीन व वैक्सिनेशन (टीका व टीकाकरण) को लेकर दो स्तर का भ्रम व अज्ञानता।

अंतिम बिंदु के अतिरिक्त शेष सभी स्वत: स्पष्ट जैसे हैं। चौथे बिंदु पर कथित पढ़े-लिखों को भी कुछ नहीं पता यह निरंतर देखने में आ रहा है। अत: टीके से जुड़े तथ्यों को समझ लेना अनिवार्य है

उपर्युक्त सब कुछ कर चुकने के बाद अंतत: जैसे-तैसे जब लोगों ने टीका लगवा लिया, तो उसके साथ ही एक अन्य भूल हुई। उसी के स्पष्टीकरण हेतु आज यह सब लिखना आवश्यक लगा क्योंकि 18 वर्ष तक के सभी लोगों के लिए टीके का पंजीकरण खुल गया है। कृपया इसे ठीक से समझ लें ताकि टीके पहले तो भारत में लोगों ने यह गलती की कि वे टीके को हौव्वा समझते रहे।

विरोध की राजनीति व दुकान करने वालों ने खूब बरगलाया कि सरकार नपुंसक बनाना चाहती है, इसलिए टीका दे रही है। राजनैतिक आकाओं द्वारा यह भी कहा गया कि टीका हानिकारक है, हम तो नहीं लेंगे, न कोई और ले। इस कारण टीकाकरण खुल जाने के बाद भी लोगों ने उचित नहीं समझा कि जाकर टीका लगवा लें। उनके मूर्खतापूर्ण प्रचार ने कितनी हत्याएं की हैं कि गणना नहीं।

समझना यह है, या बचना यह समझने से है कि यह टीका बुखार या अन्य रोगों के टीके की भांति कार्य करता है। नहीं, कदापि नहीं। वे टीके दवा को टीके के रूप में देकर तुरंत प्रभावी होते हैं और यह टीका वस्तुत: चेचक व तपेदिक आदि के टीके की भांति है, जो प्रतिरक्षा प्रणाली में परिवर्तन करता है और एंटीबॉडी का निर्माण करता है। उन एंटीबॉडी के निर्माण की प्रक्रिया को सक्रिय करने के लिए टीके के द्वारा उसी रोग के विषाणु/जीवाणु आदि मनुष्य के भीतर सुरक्षित प्रक्रियानुसार प्रविष्ट करवाए जाए हैं; यह सुनिश्चित करने वाले अवयवों के साथ, कि देह पर रोग का प्रकोप न हो व वह कोरोना के बाहरी प्रक्षेप से बचने के लिए 'एंटीबॉडीज' निर्माण करने लगे ताकि समय आने पर प्रतिरक्षा-प्रणाली उनका प्रयोग कर स्वयं को बचा सके। यह कुछ-कुछ विष को विष द्वारा मारने के सिद्धांत पर कार्य करता है। जैसे तपेदिक और चेचक आदि के टीके में तपेदिक व चेचक के जीवाणुओं का प्रयोग किया जाता है।

अत: जब कोरोना का टीका लगता है, या लगेगा तो उस के पश्चात् हमारा प्रतिरक्षा तंत्र टीके के माध्यम से सुरक्षित प्रक्रिया द्वारा प्रविष्ट हुए उस वायरस के विरोध में सक्रिय हो जाता है व उससे लड़ने के लिए एंटीबॉडीज बनाने में लग जाता है ताकि अवसर आने पर वह कोरोना से युद्ध जीत सके। बाह्य स्तर पर प्रथम टीके के पश्चात् प्रारम्भ होने जा रही इस प्रक्रिया का अधिकांश को पता नहीं चलता क्योंकि मेडिकल ने इसे स्वास्थ्य-सुरक्षा मानकों के अनुरूप ही बनाया है। दूसरे टीके के पश्चात् अधिकांश को बुखार आदि आना उसी का परिणाम है। जो यह बताता है कि हमारा प्रतिरक्षा तंत्र बहुत प्रभावित हुआ है और भीतर काम जारी है।

वस्तुत: टीका लगने के बाद हमारा प्रतिरक्षा तंत्र 'इम्यून सिस्टम' टीके के माध्यम से कोरोना का जो सुरक्षितअंश 'एंटीबॉडीज' निर्माण के उद्देश्य से हमारी देह में भेजा गया है, उस के प्रभाव में होता है, एक प्रकार का परिवर्तक युद्ध लड़ रहा होता है। अत: पहले टीके के बाद हमारी इम्यूनिटी अल्प काल के लिए कम हो जाती है। दूसरा टीका लगने के बाद तो हमारी इम्यूनिटी एक प्रकार से कम हो जाती है क्योंकि वह भीतरी परिवर्तनों के लिए युद्धस्तर पर व्यस्त होती है। इसलिए वह किसी भी बाहरी दबाव या लापरवाही को नहीं झेल सकती। इम्युनिटी को पूरा सामान्य होने व युद्ध जीत कर वापिस लौटने में कम-से-कम दो माह और लगते हैं।

यदि आप को टीके नियमानुसार लग गये, आपने अनुशासन आदि का पालन किया तो कोरोना यदि कभी हुआ भी तो कम-से-कम आप मरेंगे नहीं, ऐसा डॉक्टर बताते हैं। इसलिए पहले टीके से लेकर दूसरे टीके के दो माह पश्चात् तक विभिन्न अनुपातों में हमारा सुरक्षा तंत्र एकदम कमजोर व भीतरी युद्ध में लगा हुआ होता है। ऐसे में किसी भी प्रकार की न्यून-से-न्यून लापरवाही भी बहुत भारी पड़ जाती है।

धर्मः

डॉ. शिव प्रसाद शर्मा

अयं मानवलोकः धर्मोपरि स्थितः धर्मेण ध्रियते परिपाल्यते च। ध्रियते इति धर्मः, इत्युक्तदिशा धर्म एव लोकं धरति विभर्ति सृजति पालयति च। लोकस्य धारणात् धर्मं इत्याख्यातः। अयमेव निखिलब्रह्माण्डस्याधारः वर्तते। न केवलं मनुष्यपशुपक्षि- सरीसृपादय एव धर्मेणानुशासिताः, अपि तु अशरीरिणोऽपि धर्म विहाय स्थातुं न शक्नुवन्ति। पश्य तावत् सूर्यस्य धर्मः तपनं तमोऽपहरणम्। यदि सः स्वधर्म हित्वा न तपेत् प्रकाशयेत् लोकं वा तदा तस्य प्रतिष्ठापि न स्यात्। एवमेव चन्द्रादीनामपि ग्रहाणां स्थितिः। स्वधर्मपालयत्रेव स्वस्वव्यापारेषु सर्वे तिष्ठन्ति। दिवाकरः दिवसे , निशाकरश्चन्द्रः निशीथे प्रकाशते। वायुर्वाति, नद्यः प्रवहन्ति, पुष्पाणि सुगन्धिं विकिरन्ति ऋतुपरिवर्तनश्च भवति।

भारतीय संस्कृतिः अपि प्राचीनकालादेव धर्मप्रधाना धर्मेणानुशासिता वर्तते। पुरुषार्थचतुष्टयेषु धर्म एव प्रधानः। सर्वसाधकत्वात्। शास्त्रेषु धर्मस्य लक्षणं परिभाषा च 'यतोऽभ्युदयानिः श्रेयससिद्धिः स धर्मः' इति प्राप्यते। अस्यार्थः- येनोपायेन लोकस्य प्राणिमात्रस्य वा अभ्युदयः समुन्नतिः समृद्धिः निःश्रेयसः सकलकल्याणस्य च सिद्धिः उपलब्धिः भवति, स उपायः हेतु एव धर्म इति फलति। मनुस्मृतौ धर्मस्य दश लक्षणानि प्रोक्तानि यथा-

धृतिः क्षमा दमोऽस्तेयं शौचमिन्द्रियनिग्रहः।
धीर्विद्या सत्यमक्रोधो दशकं धर्मलक्षणम्॥

एषु धृतिः, धैर्यम्, क्षमा अपराधितितिक्षा, दमः, विषयानुरागप्रतिबंधनम् अस्तेयम्, चौर्यवृत्तिपरिहारः, शौचम् कुप्रवृत्तिभ्यः शुचित्वम्, इंद्रियनिग्रहः संयमः, धीः कर्त्तव्याकर्त्तव्यविवेकिनी बुद्धिः, विद्या विविधशास्त्रेषु वर्णिताम्चतुर्दशविद्याः, सत्यम् ऋतं सत्यभाषणम्, अक्रोधः कोपस्याभावः इति एते दशगुणा यस्मिन् मानवे सन्ति, स एव धार्मिक इति।

धार्मिकः मनुष्य एव समाजस्य राष्ट्रस्य वंशस्य जातेश्च समुन्नतिं कर्तु समर्थः भवति। धर्मः मानव व्यवहारं नियमति। सत्यं वद, हिंसा मां कुरु, जीवेषु दयां विधेहि इत्यादय उपदेशाः मानवजीवनं आदर्शरूपेण प्रस्तुवन्ति। धर्मेण युक्तः मनुष्यः सदाचारी श्रेष्ठः प्रेष्ठश्च भवति, धर्महीनः पशुतुल्यः भवति। उक्तश्च-

आहारनिद्राभयमैथुनश्च
सामान्यमेतत्पशुभिर्नराणाम्।
धर्मो हि तेषामधिको विशेषो धर्मेण हीनाःपशुभि समानाः॥

अतः लोकव्यवहारस्य सम्यक्प्रवर्तनाय, समाजस्य संस्थित्यै समुन्नत्यै च धर्मपालनस्य महती आवश्यकता विद्यते। राष्ट्रीय चरित्र निर्माणार्थमपि धर्मस्यापेक्षा वर्तते। इदानीं धर्मस्य परिभाषाक्षेत्रश्च संकुचित दृश्यते। प्रम्प्रति धर्मशब्दात् सम्प्रदायविशेषः गृह्यते, तथा च धर्मकृत्यशब्देन उपासनापद्धतिः बोध्यते। अतः परस्परं परम्पराया प्रतिलोमत्वात् विरोधः संघर्षश्च भवति, किंतु व्यापक दृष्ट्या विवेचनेन ज्ञातं भवति यत्, सर्वेऽपि धर्माः सम्प्रदायाः वा मनोः उक्तं लक्षणं समर्थयन्ति। तत्र न कोऽपि विोधः। अत एतेषां दश गुणानां रक्षा प्राणपणेन कर्तव्य। यत उक्तं-

'धर्म एव हतो हन्ति, धर्मो रक्षति रक्षितः' इति॥

OO

आर्योद्देश्यरत्नमाला

- **स्वभाव :** जिस वस्तु का जो स्वाभाविक गुण है जैसे कि अग्नि में रूप, दाह अर्थात जब तक वह वस्तु रहे, तब तक उसका वह गुण भी नहीं, छूटता, इसलिए उसको 'स्वभाव' कहते हैं।
- **प्रलय :** जो कार्य जगत का कारण रूप होना अर्थात् जगत का करने वाला ईश्वर जिन-जिन कारणों से सृष्टि बनाता है कि अनेक कार्यों को रचके यथावत पालन करके पुनः कारणरूप करके रखना है, जिसका नाम 'प्रलय' है।
- **मायाबी :** जो छल, कपट, स्वार्थ में ही प्रसन्नता, दम्भ, अहंकार, शठतादि दोष हैं, इसको 'माया' कहते हैं और जो मनुष्य इससे युक्त हो, वह 'मायाबी' कहाता है।

महान क्रांतिकारी पंडित रामप्रसाद 'बिस्मिल'

डॉ. मदन लाल वर्मा 'क्रांत'

11 जून जन्म दिवस पर विशेष

इस संसार में अब तक अनगिनत आत्मकथाएं लिखी जा चुकी हैं तथा आगे भी लिखी जाती रहेंगी परंतु शहीद रामप्रसाद बिस्मिल की आत्मकथा जैसा गौरव शायद ही किसी को प्राप्त हो। इसका कारण निम्नलिखित पंक्तियों से स्पष्ट है- '19 दिसम्बर 1927 ई. पौष कृष्ण 11 संवत् 1984 विक्रमी प्रातः साढ़े छह बजे इस शरीर को फांसी पर लटका देने की तिथि निश्चित हो चुकी थी। इस कोठरी में सुयोग प्राप्त हो गया है कि अपनी कुछ अंतिम बातें लिखकर देशवासियों को अर्पण कर दूं।

संभव है मेरे जीवन के अध्ययन से किसी आत्मा का भला हो जाय।' काल कोठरी में बैठकर, फांसी लगने से मात्र कुछ घंटे पहले तक, उन्होंने आत्मकथा लिखकर एक इतिहास बना डाला तथा लिख भी डाला। धन्य हैं ऐसे वीर-मृत्यु के भय को जीत लेने वाले- ए भारत के नौजवान साथियों! क्या ये शहीद हमारे आदर्श नहीं होने चाहिए? आओ अब इस देश भक्त नौजवान के जीवनामृत का आचमन करें तथा उसके विचारों की कथा को श्रद्धाभाव से हृदयंगम करें।

जन्म तथा शिक्षा : क्रांतिकारी शहीद रामप्रसाद बिस्मिल का जन्म ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष 11 संवत् 1954 विक्रमी (11 जून 1897 ई.) को शाहजहांपुर, उत्तर प्रदेश में हुआ। आपके पिता जी का नाम श्री मुरलीधर व माता का नाम श्रीमती मूलमती देवी था। प्रारम्भ में आपके परिवार की आर्थिक स्थिति बहुत ही खराब थी। आपके पिताजी ने एक दो साल म्यूनिसिपैलिटी की नौकरी की तत्पश्चात् कचहरी में स्टाम्प बेचने लगे। फिर रुपये का लेनदेन भी करने लगे। बिस्मिल जी का एक बड़ा भाई भी था जिसका बचपन में ही निधन हो गया। बिस्मिल जी के पश्चात पांच बहनों और तीन भाइयों का भी जन्म हुआ। जब आप सात वर्ष के थे तब आपके पिताजी ने उन्हें हिंदी अक्षरों का बोध कराया तथा एक मौलवी साहब के मकतब में उर्दू पढ़ने भेज दिया। बचपन में आप बहुत शरारती थे। पांचवीं कक्षा में पढ़ते समय आपको घर से पैसे चुराने, सिगरेट व भांग पीने तथा उपन्यास पढ़ने की लत लग गई थी।

आर्यसमाज के विचारों का जीवन में परिवर्तन : आपके घर के पास ही देवमंदिर था, आपको उसके पुजारी ने ब्रह्मचर्य पालन व पूजा पाठ का उपदेश दिया। आर्यसमाज के मुंशी इंद्रजीत जी ने आपको संध्या करने का उपदेश दिया तथा सत्यार्थ प्रकाश पढ़ने को दिया। उसे पढ़कर आपका जीवन पूर्णतः बदल गया। आर्यसमाजी विद्वान स्वामी सोमदेव को आप अपना गुरू मानते थे। देवतास्वरूप भाई परमानंद की फांसी की सजा सुनकर आपने अंग्रेजी राज्य को ध्वस्त करने की प्रतिज्ञा की।

काकोरी कांड व फांसी : आपने अपनी आत्मकथा में क्रांतिकारी दल बनाने, नौजवानों को संगठित करने, क्रांतिकारी कार्यों व अस्त्र-शस्त्रों के लिए पैसा एकत्र करने संबंधी विवरण विस्तारपूर्वक दिए हैं। दल की आर्थिक दशा सुधारने हेतु क्रांतिकारी नौजवानों ने 9 अगस्त 1925 को काकोरी स्टेशन के पास रेलगाड़ी में से सरकारी खजाना लूट लिया। एक साथी की गद्दारी के कारण 25 दिसम्बर को तथा आपको अन्य साथियों सहित गिरफ्तार कर लिया गया। 17 दिसम्बर 1927 को श्री राजेन्द्र नाथ लाहिड़ी को गोंडा जेल में तथा श्री बिस्मिल को गोरखपुर जेल में, श्री अशफाक को फैजाबाद में व श्री रोशन सिंह को इलाहाबाद जिला जेल में फांसी पर लटका दिया गया। आकाश में एक वाक्य आज भी गूंज रहा है- शहीदों की चिताओं पर, लगाओगे किस दिन तुम मेले, तुम्हारे मेलों की खातिर, वो चढ़े फांसी पर अकेले।

शहीद बिस्मिल की वसीयत : उन्होंने मौत के साये में अपनी आत्मकथा लिखी तथा फांसी के फंदे पर झूल गए ताकि उनके देशवासी सुख के हिंडोले में झूल सकें। अंग्रेजी साम्राज्य से टक्कर लेते हुए आहुत कर दी ताकि हम स्वराज्य का सुख भोग सकें। अनगिनत दिन भूखे-प्यासे रहकर काटे ताकि उनके देशवासी कभी भूखे न सोये। हमारा परम कर्तव्य नहीं कि भावी पीढ़ी उनकी आत्मकथा पढ़े- पुस्तकालयों में रखें- साथियों में उनके विचारों का प्रचार करें? शहीद बिस्मिल की आत्मकथा हमारे लिए अनमोल वसीयत है।

आर्यसमाज नोएडा पिछले कई वर्षों से बिस्मिल जी की याद में उनके जन्मदिवस व शहीदी दिवस पर भव्य कार्यक्रम करता है। बिस्मिल जी की याद में सभागार का नाम 'बिस्मिल सभागार' रखा गया है।

अमर शहीद ऊधम सिंह

पुण्यतिथि
13 जून शत्-शत् नमन

पटियाला रियासत के एक छोटे से ग्राम सुनाम में टहल सिंह रहा करते थे। वहीं वे रेलवे में काम करते थे। उनके यहां 26 दिसम्बर, 1899 में एक बालक का जन्म हुआ। बाल सुलभ चंचलता के कारण उनका 'ऊधम सिंह' नाम रख दिया गया। ऊधम सिंह के एक ही छोटा भाई था। दोनों भाई सुखपूर्वक रह रहे थे कि एकाएक उनकी माता जी चल बसीं। पिता टहल सिंह दोनों बच्चों को साथ लेकर अमृतसर आ गए। यहां पिताजी भी शीघ्र ही परलोक सिधार गये। ऊधम सिंह अपने अनुज के साथ अनाथालय की शरण में चले गए। परिवार का अन्य कोई सदस्य नहीं था। दुर्भाग्य ने यहां भी पीछा नहीं छोड़ा। अनुज भी साथ छोड़कर परलोकवासी हो गया। अकेले बचे ऊधम सिंह। अनाथालय में रहकर मैट्रिक पास किया और वहीं कुछ दस्तकारी भी सीखी। 13 अप्रैल 1919 को बैशाखी के मेले में जनरल ओ. डायर ने निहत्थी व निरीह जनता पर जलियांवाला बाग में अंधाधुंध गोली चलवाई। बताया जाता है कि 15-20 मिनट के इस हत्याकांड में 1600 राउंड गोलियां चलाई गयी थीं। जलियांवाला बाग की धरती लाल हो गई थी। हजारों की संख्या में हुई मौतों को देख युवा ऊधम सिंह की रगों में अंग्रेजों के विरुद्ध बदले की ज्वाला धधक उठी। ब्रिटिश शासन के प्रति गहरी नफरत पैदा हो गयी। बीस वर्षीय युवक ऊधम सिंह ने इस हत्याकांड का बदला लेने के लिए उसी समय प्रण किया। देश में जलियांवाला बाग हत्याकांड से पीड़ा और शोक के बादल चारों ओर छा गए। जनरल डायर कई वर्ष बीमार रहकर 23 जुलाई 1927 को अपनी मौत मर गया। जबकि माइकेल ओ. डायर 13 मार्च 1940 को कैक्सटन हाल, लंदन में अपनी बहादुरी के गीत गाने आया था। ऊधम सिंह किसी तरह इंग्लैंड पहुंचकर अनेक वर्षों से इसी ताक में थे कि कैसे माइकेल ओ. डायर के खून से जलियांवाला बाग का बदला लिया जाए? ऊधम सिंह ने भाषण के अंत में चार बजकर तीस मिनट पर दो गोलियां दागी जिससे माइकेल ओ. डायर वही ढेर हो गया। ऊधम सिंह चिल्लाये। 'जलियांवाला बाग कांड का बदला चुका दिया।' ऊधम सिंह को ब्रिटेन की जेल के सींखचों में डाल दिया गया। अंत में 13 जून 1940 को उन्हें फांसी की सजा दे गई। भारत माता के वीर सपूत ऊधम सिंह ने फांसी पर झूलने से पहले कहा था- 'मैंने जलियांवाला बाग हत्याकांड अपनी आंखों से देखा था। माइकेल ओ. डायर का नृशंसतापूर्ण अत्याचार एवं भयानक दमन और गोलीकांड मेरे अंतस में अभी तक न निकल सका। उसी दिन की गई प्रतिज्ञा अब मैं पूरी कर चुका हूं।' ऐसे देशभक्त ऊधम सिंह का बलिदान भारत के जन-मानस को सदैव राष्ट्रभक्ति की प्रेरणा देता रहेगा।

पंडित चमूपति, एम.ए.

स्मृति दिवस
15 जून, शत्-शत् नमन

पंडित चमूपति का जन्म 15 फरवरी, 1863 ई. में बहावलपुर (अब पाकिस्तान) में हुआ था। इनके पिता का नाम मेहता बसंदा राम था। बालक का नाम उन्होंने चम्पतराय रखा था। पं. चमूपति जी ने मिडिल परीक्षा में अपनी रियासत में सर्वप्रथम स्थान प्राप्त किया था। मैट्रिक की परीक्षा पास करके वे बहावलपुर के सादिक ईजर्टन कॉलेज में प्रविष्ट हो गए। कॉलेज में उन्होंने उर्दू काव्य लिखना आरम्भ कर दिया। सर्वप्रथम उन्होंने सिखों के धर्मग्रंथ 'जपजी' का उर्दू में काव्यानुवाद किया। एमए की परीक्षा उत्तीर्ण कर लेने पर आप उसी रियासत के एक मिडिल स्कूल में अध्यापक नियुक्त हो गये। मेहता चम्पतराय के विचारों में एमए करने के उपरांत भी स्थिरता नहीं आ पाई थी। प्रारंभ में वे सिख धर्म की ओर आकृष्ट हुए तो फिर शनैः शनैः नास्तिक बन गये। इसी बीच उन्हें स्वामी दयानंद के ग्रंथों के अध्ययन का सुयोग सुलभ हुआ। परिणाम स्वरूप ईश्वर के प्रति उनकी आस्था तो जम गई किंतु वे शंकर वेदांत की ओर झुकने लगे। यद्यपि वेदांत पर भी उनकी आस्था अधिक दिन तक टिकी नहीं रह पाई किंतु मूर्ति पूजा की ओर उनका झुकाव बढ़ गया। शनैः शनैः जब उनका अध्ययन परिपक्व होता गया तो वे आर्य समाज के सिद्धांतों को स्वीकार करने लगे। उन्हें वैदिक धर्म के प्रति आस्था हो गई। आर्य समाज में प्रविष्ट होने पर वे चम्पत राय से चमूपति बन गये। आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के कार्य संचालन हेतु पं. चमूपति जी लाहौर आ गये। सभा द्वारा संचालित दयानंद सेवा सदन के सदस्य बनकर उन्होंने अपना सारा जीवन वैदिक धर्म के प्रचार में अर्पित कर दिया। गुरुकुल कांगड़ी को भी पंडित चमूपति की सेवाओं का लाभ प्राप्त हुआ था। इस गुरुकुल के वे उपाध्यक्ष, मुख्याधिष्ठाता तथा आचार्य के पदों को सुशोभित करते रहे। 15 जून 1939 को उनका स्वर्गवास हो गया। पं. चमूपति जी ने अनेक ग्रंथों का प्रणयन किया। वेदों का भाष्य किया। वेद की रचना की। पं. चमूपति असाधारण कोटि के विद्वान थे। हिंदू, उर्दू, और अंग्रेजी इन तीनों विषयों पर उनका समान अधिकार था। ■■

जन्म : 23 जून
शत्-शत् नमन

अमर शहीद राजेन्द्र नाथ लाहिड़ी

आजकल के कुछ नवयुवक लूटपाट और हिंसक काम करके मौज-मस्ती की जिंदगी बिताने में प्रवृत्त हैं, जिसकी समाज निंदा करता है, किंतु काकोरी ट्रेन डकैती का उद्देश्य विदेशी सरकार के जुल्मों के खिलाफ एक नियोजित युद्ध करना था जिसके लिए वे हथियार खरीदना चाहते थे। वे इसके लिए जनता को परेशान करके उन्हें लूटने की बजाय केवल सरकारी खजाना लूटना चाहते थे। काकोरी केस के क्रांतिकारियों के नायक रामप्रसाद बिस्मिल ने इसके लिए कड़े निर्देश दिये थे। राजेन्द्र नाथ लाहिड़ी (जन्म 23 जून, 1901 बलिदान 17 दिसंबर, 1927) संभवतः सबसे कम अवस्था के काकोरी केस के छब्बीस वर्षीय शहीद थे। उनके पिता क्षितिज मोहन और माता बसंत कुमारी थीं। एक सामान्य आर्थिक स्थिति के परिवार में रहकर उन्होंने स्नातक परीक्षा पास की किंतु परिवार बसाने और चलाने की बजाय शचीन्द्र नाथ सान्यास की प्रेरणा से देश स्वातंत्रय के लिए कांटों भरे रास्ते और जान जोखिम का खतरा हर क्षण होने का निश्चय किया। वे गर्म दल के सदस्यों के साथ सक्रिय हो गये। अपने लेखन को भी उन्होंने क्रांतिकारी दिशा दी। बगवाणी और शंख जैसी प्रसिद्ध बंगला पत्रिकाओं में उनका लेखन नियमित था। सर्वश्री रामप्रसाद बिस्मिल, राजेन्द्र नाथ लाहिडी, अशफाक उल्ला खां, मन्मथनाथ गुप्त, शचीन्द्र नाथ बख्शी, रामदुलारे त्रिवेदी, मुरारी शर्मा, केशव चक्रवर्ती, मुकुन्दीलाल गुप्त, चंद्रशेखर आजाद और मुखबिर बनवारी लाल ने दिनांक 9 अगस्त 1925 लगभग 6 बजे शाम को रुहेलखंड अवध गाड़ी को लूटने का निर्णय किया। रेल काकोरी से लखनऊ जा रही थी। इसमें टिकट बिक्री का एकत्रित धन था। अभियान को सफल करके क्रांतिकारी तितर-बितर हो गए। राजेन्द्र लाहिड़ी 26 सितंबर को वाराणसी से कोलकाता चले गये। दक्षिणेश्वर के निकट क्रांतिकारियों का एक गुप्त मिलन केंद्र था जिस पर पुलिस ने छापा मारा और अभियुक्तों को हिरासत में ले लिया। इन देश भक्तों पर मुकदमा चलाया गया और काले पानी की कठोर सजा दी गई। 17 दिसम्बर 1927 को गोण्डा जेल के बाहर लोग राजेन्द्र लाहिड़ी की जय-जयकार कर रहे थे। राजेन्द्र इतने प्रसन्न थे कि उनका वजन 5 पौंड बढ़ गया था। राजेन्द्र ने प्रातःकालीन कार्य किये। इसमें व्यायाम और गीतापाठ था। जिलाधिकारी ने यह सब देखा तो पूछा कि 'फांसी से पूर्व यह क्यों?' राजेन्द्र ने उत्तर दिया, 'मेरा नाम राजेन्द्र लाहिड़ी है। मेरी धारणा है कि इस भौतिक शरीर को जिसे मैंने बड़े यत्न से अपने आचरण और कर्तव्य के आगे पवित्र रखा है, स्वस्थ तन और स्वस्थ मन से इसी भारत माता की गोदी में पुनः जन्म लूंगा और अपनी मातृभूमि की सेवा करूंगा।

अंतरराष्ट्रीय योग दिवस

योग दिवस
21 जून, पर विशेष

योग के अंतरराष्ट्रीय दिवस को विश्व योग दिवस भी कहते है। 11 दिसंबर 2014 को अंतरराष्ट्रीय योग दिवस के रूप में 21 जून को संयुक्त राष्ट्र आम सभा ने घोषित किया है। भारत में योग लगभग 5,000 हजार वर्ष पुरानी एक मानसिक, शारीरिक और आध्यात्मिक प्रथा के रूप में देखा गया है। योग की उत्पत्ति प्राचीन समय में भारत में हुयी थी जब लोग अपने शरीर और दिमाग में बदलाव के लिये ध्यान किया करते थे। पूरे विश्वभर में योग अभ्यास की एक खास तारीख की और योग दिवस के रूप में मनाने की शुरुआत भारतीय प्रधानमंत्री के द्वारा संयुक्त राष्ट्र आम सभा से हुयी थी। सभी के लिये योग बहुत ही जरूरी है और अगर इसे सुबह-सुबह रोजाना करें तो ये सभी के लिये फायदेमंद साबित होगा। इसका आधिकारिक नाम यूएन अंतरराष्ट्रीय योग दिवस है और इसे योगा दिवस भी कहा जाता है। योग, ध्यान, बहस, सभा, चर्चा, विभिन्न प्रकार के सांस्कृतिक कार्यक्रमों की प्रस्तुति आदि के माध्यम से सभी देशों के लोगों के द्वारा मनाये जाने वाला ये एक विश्व स्तर का कार्यक्रम है। विश्व योग दिवस का इतिहास : 2014 में 11 दिसंबर को संयुक्त राष्ट्र आम सभा के द्वारा हर वर्ष 21 जून को योग का अंतरराष्ट्रीय दिवस या विश्व योग दिवस के रुप में पूरे विश्वभर में योग दिवस को मनाने के लिये घोषित किया गया था। यू.एन. आम सभा के अपने संबोधन के दौरान 2014 में 27 सितंबर को संयुक्त राष्ट्र आम सभा में भारतीय प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के द्वारा आह्वान के बाद योग दिवस मनाने की घोषणा की गयी थी। पूरे विश्वभर के लोगों के लिये योग के सभी फायदों को प्राप्त करने के लिये अंतरराष्ट्रीय योग दिवस के रूप में हर वर्ष 21 जून को अंगीकृत करने के लिये संयुक्त राष्ट्र आम सभा से उन्होंने आह्वान किया था। अपने भाषण के दौरान नरेन्द्र मोदी ने यू.एन. की आम सभा से कहा कि 'योग भारतीय परंपरा का एक अनमोल उपहार है।'

योग ही क्यों जीवन सार

21 जून 'योग दिवस' के अवसर पर

स्वामी अमृतानन्द सरस्वती

सभी मनुष्यों के जीवन का सार क्या है? सभी इच्छापूर्वक कभी भी, किसी भी देश में, किसी भी परिस्थिति में, किसी से भी दुख नहीं चाहते हैं, इसके विपरीत सुख की स्वाभाविक इच्छा रखते हैं। सामान्यत: सभी व्यक्ति दुखों को बाहर से ही वस्तु, व्यक्ति, परिस्थितियों से पाते हैं। ऐसा अनुभव है तथा सुख का भी ऐसा ही अनुभव है। इस कारण समस्त पुरुषार्थ बाहर संसार की ओर रहता है। जीवन व्यतीत हो जाता है पर ऐसा अनुभव नहीं बन पाता है कि जिसे छोड़ना था (दु:ख) को पूर्ण रूप से छोड़ चुका हूं तथा जिसे (सुख) पाना था, प्राप्त कर लिया अब न कुछ छोड़ने योग्य रहा, न पाने योग्य शेष रहा अर्थात् जीवन आसार लगता है। जिस सार के लिए लगा था वह हाथ नहीं लगा।

अनुभवी ऋषियों ने उपरोक्त जीवन सार अर्थात् छोड़ने योग्य जो था उसे छोड़ चुका और कुछ छोड़ने नहीं रहा, पाने योग्य जो था वह पा लिया। अब और कुछ प्राप्त करने योग्य नहीं रहा। यह अनुभव प्राप्ति का एकमात्र उपाय योग बताया है। संसार से तो यह प्राप्त होता नहीं क्योंकि यहां सब कुछ अनित्य, विकारी है। उससे नहीं मिल सकता, मात्र परमेश्वर ऐसा है जो समस्त दुखों से रहित व आनंद स्वरूप है। उसके साक्षात्कार से ही यह सम्भव है। ईश्वर साक्षात्कार की एकमात्र विधि योग है। योगाचरण ही यथार्थ धर्माचरण, ईश्वर भक्ति का विधान है। धर्माचरण, योगाचरण के बिना सम्भव नहीं है। ईश्वर भक्ति भी बिना योगाचरण के नहीं हो सकती। जो भी ईश्वर भक्त होगा वह धार्मिक होगा ही और जो धार्मिक होगा वह योगाचरण से युक्त अवश्य ही होगा। योगाचरण है क्या? उसको देखते हैं- योग के आठ अंगों का क्रियात्मक आचरण रूप व्यवहार में लाने का नाम ही योगाचरण है। अज्ञान, अशुद्धि, मल हटकर ज्ञान, शुद्धि, पवित्रता आती है जो बढ़ते-बढ़ते पूर्ण तत्वज्ञान दिव्य नेत्रों को प्राप्त कराकर परमेश्वर के साक्षात्कार को कराने में सामर्थ्य प्रदान करती है, जिससे जीवन सार की प्राप्ति होती है। योग के वे आठ अंग निम्न हैं-

यम, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा, ध्यान व समाधि। इनके दो भाग हैं- बहिरंग और अंतरंग। बहिरंग में प्रथम पांच अंग है। अंतरंग में अंतिम तीन अंग आते हैं। बहिरंग के प्रथम दो अंग यम व नियम हैं, वे पांच-पांच हैं। अहिंसा, सत्य अस्तेय, ब्रह्मचर्य, अपरिग्रह ये पांच यम हैं। शौच, संतोष, तप, स्वाध्याय व ईश्वर प्राणिधान ये पांच नियम हैं। आर्यसमाज के संस्थापक महर्षि दयानंद जी उपासना के आठ अंगों में से प्रथम दो अंगों यम और नियम को उपासना अंगों के बीज कहते हैं। वे कहते हैं जो यमों की उपेक्षा करके मात्र नियमों पर ध्यान देता है। वह योग मार्ग से पतित हो जाता है। महर्षि व्यास जिन्होंने पतंजलि के योग दर्शन का भाष्य किया है, लिखते हैं कि यम व नियमों में सबसे मुख्य अहिंसा है। संसार के समस्त धार्मिक, भक्तों, संत, महात्मा, महापुरुष जो हुए थे, हैं या होंगे व सभी धर्म-नियमों के पालन करने वाले ही थे, हैं व रहेंगे जिनके नाम- मर्यादापुरुषोत्तम श्रीराम, योगेश्वर श्रीकृष्ण, महात्मा गौतमबुद्ध, गुरुनानक देव, कबीर दास, रामकृष्ण परमहंस, योगीराज अरविंद हैं वे व अन्य जो भी महापुरुष हुए हैं उनके भी जीवन के अवलोकन से भी यह सुस्पष्ट हो जायेगा कि वे भी यम नियमों के पालक ही थे, विरोधी नहीं इसलिए योग ही जीवन सार है।

महर्षि पतंजलि सार्वभौम कहावत कहते हैं। इनके पालन की विधि को बताते हुए लिखते हैं कि इनका पालन सभी प्राणियों के साथ, सभी देशों में, सभी कालों में, सभी परिस्थितियों में करना होता है। इनमें यमों के पालन की विधि इस प्रकार है। हिंसा न करना, न करवाना, न करने वालों का अनुमोदन करना, प्रीति करना, करवाना व करने का उपदेश देना, असत्य न बोलना, न बुलवाना, न अनुमोदन करना, सत्य बोलना, बुलवाना व उसका उपदेश करना, चोरी न करना, न करवाना, न करने वालों का अनुमोदन करना, सत्य व्यवहार रखना, रखवाना व रखने वालों का उपदेश करना, व्याभिचार न करना, न करवाना, न करने वालों का अनुमोदन करना, करवाना व ब्रह्मचर्य पालन का उपदेश देना, अनावश्यक व हानिकारक संचय न करना, आवश्यक हितकारी वस्तुओं, विचारों का ही संचय करना, करवाना व उसका उपदेश देना। ये महापुरुष ऐसा ही करते व कराते थे। उनके मानने वालों को भी अनकूल आचरण करना चाहिए। यही उनकी भक्ति का यथार्थ स्वरूप होगा। ■■

मेरठ क्रांति दिवस पर शहीद सम्मान स्मृति मंच का ज्ञात अज्ञात शहीदों को कोटि-कोटि नमन व भावपूर्ण श्रद्धांजलि

दस मई 1857 का दिन भारत ही नहीं पूरी दुनिया के इतिहास में स्वर्णिम अक्षरों में दर्ज है। प्रथम स्वतंत्रता संग्राम की क्रांति की ज्वाला मेरठ की क्रांतिधरा से ही निकली थी, जो बाद में पूरे देश में फैली। इसी ने अंग्रेजों के पैर भारत से उखाड़ने की भूमिका तैयार की और अंततः 1947 में भारत को स्वतंत्रता प्राप्त हुई। इस जंग में लाखों ज्ञात-अज्ञात स्वतंत्रता सेनानियों ने अपना बलिदान दिया।

दस मई के दिन ही मेरठ से आजादी के पहले आंदोलन की शुरुआत हुई थी, जो बाद में पूरे देश में फैल गया। 85 सैनिकों के विद्रोह से जो चिंगारी निकली वह धीरे-धीरे ज्वाला बन गई। क्रांति की तैयारी सालों से की जा रही थी। स्थानीय स्तर पर स्वतंत्रता सेनानियों ने अपनी सशक्त भूमिका पूरी दुनिया के सामने रखी। मेरठ कॉलेज के इतिहास विभागाध्यक्ष डॉ. विघ्नेश त्यागी ने बताया कि गाय और मांस का चर्बी लगा कारतूस चलाने से मना करने पर 85 सैनिकों ने जो विद्रोह किया। उनके कोर्ट मार्शल के बाद क्रांतिकारियों ने उग्र रूप अख्तियार करते हुए 50 से ज्यादा अंग्रेजों की हत्या कर डाली। इस घटना की योजना वर्षों से तैयार की जा रही थी। मेरठ की क्रांति का लिंक अंतर्राष्ट्रीय है। क्रांतिकारी अजीमुल्ला ने 1854 से लेकर 1856 तक यूरोप का दौरा किया था। इस दौरान उन्होंने इंग्लैंड के तत्कालीन दुश्मन देशों से संपर्क साधा। मकसद अंग्रेजों के खिलाफ लड़ाई में सहयोग मांगना था। रूस और ईरान ने समर्थन देने का भरोसा दिया था। शर्त यह रखी थी दिल्ली पर दोबारा बहादुर शाह जफर को बादशाह बनाया जाए। अंग्रेजों ने बहादुर शाह जफर को कमजोर कर दिया था। लड़ाई इंग्लैंड की महारानी और भारत के बादशाह के खिलाफ दिखाने की कोशिश थी। दिल्ली में हार के बाद यह सपना अधूरा रह गया। 20 सितम्बर को दिल्ली हार गए। डॉ. केडी शर्मा का कहना है पहले आंदोलन के विफल होने का प्रमुख कारण भितरघात रहा। कई घरानों और रजवाड़ों ने गद्दारी की।

क्रांति का इतिहास : डॉ. कृष्णकांत शर्मा का कहना है कि गाय और सुअर की चर्बी से बने कारतूस चलाने से मना करने पर 85 सैनिकों के कोर्ट मार्शल की घटना ने क्रांति की तात्कालिक भूमिका तैयार कर दी थी। हिंदू और मुसलमान सैनिकों ने बगावत कर दी थी। कोर्ट मार्शल के साथ उनको 10 साल की सजा सुनाई गई। 10 मई को रविवार का दिन था। चर्च में सुबह की जगह शाम को अंग्रेज अधिकारियों ने जाने का फैसला किया। गर्मी इसका कारण था। कैंट एरिया से अंग्रेज अपने घरों से निकलकर सेंट जोंस चर्च पहुंचे। रविवार होने की वजह से अंग्रेजी सिपाही छुट्टी पर थे। कुछ सदर के इलाके में बाजार गए थे। शाम करीब साढ़े पांच बजे क्रांतिकारियों और भारतीय सैनिकों ने ब्रितानी सैनिक और अधिकारियों पर हमला बोल दिया। सैनिक विद्रोह की शुरुआत के साथ सदर, लालकुर्ती, रजबन व आदि क्षेत्र में 50 से अधिक अंग्रेजों की मौत के साथ हुई।

सैनिकों को किया गया था अपमानित : 9 मई के वो 36 घंटे कभी नहीं भुलाए जा सकते। सैनिकों की बगावत के बाद बहादुर शाह जफर को हिंदुस्तान का बादशाह घोषित कर पहली बार हिंदुस्तान की आजादी का आगाज हुआ। परेड ग्राउंड में जब अश्वारोही सेना के 85 सैनिकों का कोर्ट मार्शल कर उन्हें अपमानित किया गया। तब तीसरी अश्व सेना के अलावा 20वीं पैदल सेना व 11वीं पैदल सेना के सिपाही भी मौजूद थे। 10 मई की शाम 6.30 बजे इन सिपाहियों ने 85 सैनिकों को विक्टोरिया पार्क जेल से मुक्त करा लिया। देखते ही देखते फिरंगियों के खिलाफ विद्रोह के सुर तेजी से मुखर हुए। तीनों रेजीमेंटों के सिपाही विभिन्न टोलियों में बंटकर दिल्ली कूच कर गए। इतिहासकार डॉ. केडी शर्मा बताते हैं कि 38वीं सेना के कप्तान टाइटलर के अनुसार मेरठ से एडवांस गार्ड के सिपाही 10 मई की शाम को ही दिल्ली पहुंच चुके थे। कैप्टन फारेस्ट के मुताबिक 11 मई को मेरठ की देसी पलटनें साज सज्जा और जोश के साथ यमुना पुल पार करती देखी गईं।

वेस्ट यूपी के सेनानी भी रहे अद्वितीय : वेस्ट यूपी के सेनानियों का 1857 की क्रांति में अविस्मरणीय योगदान रहा है। बागपत के बाबा शाहमल, असौड़ रियासत के चैधरी समेत तमाम लोगों ने अपना योगदान दिया। गाजियाबाद के पांच गांव बागी घोषित कर दिए गए। बागपत के बसौद गांव को अंग्रेजों ने पूरी तरह से जला दिया। मेरठ के भी कई गांवों को अंग्रेजों ने पूरी तरह से वीरान कर दिया।

आज की कहानी

अस्पताल में एक कोरोना पेशेंट का केस आया। मरीज बेहद सीरियस था। अस्पताल के मालिक डॉक्टर ने तत्काल खुद जाकर आईसीयू में केस की जांच की। दो-तीन घंटे के ऑपरेशन के बाद डॉक्टर बाहर आया और अपने स्टाफ को कहा कि इस व्यक्ति को किसी प्रकार की कमी या तकलीफ ना हो। और उससे इलाज व दवा के पैसे न लेने के लिए भी कहा। मरीज तकरीबन 15 दिन तक अस्पताल में रहा।

जब बिल्कुल ठीक हो गया और उसको डिस्चार्ज करने का दिन आया तो उस मरीज का तकरीबन ढाई लाख रुपये का बिल अस्पताल के मालिक और डॉक्टर की टेबल पर आया। डॉक्टर ने अपने अकाउंट मैनेजर को बुला करके कहा- 'इस व्यक्ति से एक पैसा भी नहीं लेना है। ऐसा करो तुम उस मरीज को लेकर मेरे चेंबर में आओ।' मरीज व्हीलचेयर पर चेंबर में लाया गया। डॉक्टर ने मरीज से पूछा- भाई! मुझे पहचानते हो? मरीज ने कहा 'लगता तो है कि मैंने आपको कहीं देखा है।'

डॉक्टर ने कहा- याद करो, अंदाजन दो साल पहले सूर्यास्त के समय शहर से दूर उस जंगल में तुमने एक गाड़ी ठीक की थी। उस रोज मैं परिवार सहित पिकनिक मनाकर लौट रहा था कि अचानक कार में से धुआं निकलने लगा और गाड़ी बंद हो गई। कार एक तरफ खड़ी कर हम लोगों ने चालू करने की कोशिश की, परंतु कार चालू नहीं हुई। अंधेरा थोड़ा-थोड़ा घिरने लगा था। चारों और जंगल और सुनसान था। परिवार के हर सदस्य के चेहरे पर चिंता और भय की लकीरें दिखने लगी थी और सब भगवान से प्रार्थना कर रहे थे कि कोई मदद मिल जाए। थोड़ी ही देर में चमत्कार हुआ। बाइक के ऊपर तुम आते दिखाई पड़े। हम सब ने दया की नजर से हाथ ऊंचा करके तुमको रुकने का इशारा किया। तुमने बाइक खड़ी करके हमारी परेशानी का कारण पूछा।

तुमने कार का बोनट खोलकर चेक किया और कुछ ही क्षणों में कार चालू कर दी। हम सबके चेहरे पर खुशी की लहर दौड़ गई। हमको ऐसा लगा कि जैसे भगवान ने आपको हमारे पास भेजा है क्योंकि उस सुनसान जंगल में रात गुजारने के ख्याल मात्र से ही हमारे रोंगटे खड़े हो रहे थे। तुमने मुझे बताया था कि तुम एक गैराज चलाते हो। मैंने तुम्हारा आभार जताते हुए कहा था कि रुपए पास होते हुए भी ऐसी मुश्किल समय में मदद नहीं मिलती। तुमने ऐसे कठिन समय में हमारी मदद की, इस मदद की कोई कीमत नहीं है, यह अमूल्य है। परंतु फिर भी मैं पूछना चाहता हूं कि आपको कितने पैसे दूं?

उस समय तुमने मेरे आगे हाथ जोड़कर जो शब्द कहे थे, वह शब्द मेरे जीवन की प्रेरणा बन गये हैं। तुमने कहा था कि 'मेरा नियम और सिद्धांत है कि मैं मुश्किल में पड़े व्यक्ति की मदद के बदले कभी कुछ नहीं लेता। मेरी इस मजदूरी का हिसाब भगवान रखते हैं।' उसी दिन मैंने सोचा कि जब एक सामान्य आय का व्यक्ति इस प्रकार के उच्च विचार रख सकता है और उनका संकल्प पूर्वक पालन कर सकता है, तो मैं क्यों नहीं कर सकता। और मैंने भी अपने जीवन में यही संकल्प ले लिया है। दो साल हो गए हैं, मुझे कभी कोई कमी नहीं पड़ी, अपेक्षा पहले से भी अधिक मिल रहा है। 'यह अस्पताल मेरा है। तुम यहां मेरे मेहमान हो और तुम्हारे ही बताए हुए नियम के अनुसार मैं तुमसे कुछ भी नहीं ले सकता।'

ये तो भगवान की कृपा है कि उसने मुझे ऐसी प्रेरणा देने वाले व्यक्ति की सेवा करने का मौका मुझे दिया। ऊपर वाले ने तुम्हारी मजदूरी का हिसाब रखा और वो हिसाब आज उसने चुका दिया। मेरी मजदूरी का हिसाब भी ऊपर वाला रखेगा और कभी जब मुझे जरूरत होगी, वो जरूर चुका देगा। डॉक्टर ने मरीज से कहा-

'तुम आराम से घर जाओ, और कभी भी कोई तकलीफ हो तो बिना संकोच के मेरे पास आ सकते हो।' मरीज ने जाते हुए चेंबर में रखी योगेश्वर कृष्ण की तस्वीर के सामने हाथ जोड़कर कहा कि-'हे प्रभु! आपने आज मेरे कर्म का पूरा हिसाब ब्याज समेत चुका दिया।'

सीख- सदैव याद रखें कि आपके द्वारा किये गए कर्म आपके पास लौट कर आते है। और वो भी ब्याज समेत। वर्तमान में कठिन समय चल रहा है। जितना हो सकता है लोगों की मदद करें। आपका हिसाब ब्याज समेत वापस आएगा।

सदैव प्रसन्न रहिये।
जो प्राप्त है, पर्याप्त है।।

Bismil : A Journey from Poetry, to loot of Treasury to Martyrdom

Article by Dr. Vivek Arya

Ram Prasad Bismil was a freedom fighter, patriot, role model, born leader, philosopher, poet, a reformer and an ardent follower of Swami Dayanand who life was dedicated towards freedom of Motherland. His illustrative contributions to the freedom movement were noted in the Mainpuri Conspiracy of 1918, and the Kakori conspiracy of 1925 against the British rule. His love for motherland, patriotism and revolutionary kind of national spirit were kindled and he started an organization where he had got the incredible chance of leading a team with great freedom fighters including Chandrashekhar Azad, Sukhdev, Bhagat Singh, Ashfaqulla Khan, Govind Prasad, Rajguru, Bhagawati Charan, Premkishan Khanna, Thakur Roshan Singh and Rai Ram Narain.

His early childhood suffered in the hands of poverty. He had to quit his studies to support his family. Later he started visiting Aryasamaj and met Swami Somdev. Swami Somdev inspired him to read Satyarth Prakash, a revolutionary book authored by Swami Dayananda, the founder of Aryasamaj. Ram Prasad influenced by its teachings started practicing strict celibacy as well as controlled diet. He started performing daily Agnihotra and Sandhya. His disciplined life and exercise schedule transformed him into an impressive athlete with great stamina. This was not his stop.

He went ahead with his oratory skills and pen. He assumed his pen name as "Bismil" and authored patriotic poems in Urdu/Hindi and many books. His nationalist poems inspired many. The main inspiration that made him pen his poems were his incomparable love for India, revolutionary spirit and a burning zeal to free India from the foreign rule. He was ever ready to lay down his very life in the altar of the freedom struggle. "Sarfaroshi ki Tamanna" the most famous poem of Indian Freedom was authored by Bismil. Bismil authored his Autobiography while waiting for his hanging sentence in Jail. This is considered one of the finest works in Hindi literature. The autobiography of Ram Prasad Bismil was published under the cover title of Kakori ke shaheed by Ganesh Shankar Vidyarthi in 1928 from Pratap Press, Kanpur.

A rough translation of this book was got prepared by the Criminal Investigation Department of United Province in British India. Translated book was circulated as confidential document for official and police use throughout the country. In jail he came up with song "Mera rang de basanti chola." It became one of the most iconic songs of the pre-Independence era. His other notable literary contributions are Bolshevikon Ki Kartoot A revolutionary noble on Bolshevism, A Sally of the Mind, Swadeshi Rang, Swadhinta ki devi Catherine, Kranti Geetanjali, Deshvasiyon ke nam sandesh (en: A message to my countrymen. He came across Ashfaqullah Khan and both of them became intimate friends despite hailing from different communities. Later in his autobiography, Bismil devotes a huge segment to discuss the friendship he had with Ashfaqullah. In fact, both of them were tried and hanged in different jails on the same day for the same conspiracy.

कोरोना से डरो ना

कोई तो किश्त है जो शायद अदा नहीं है
साँस बाक़ी है और हवा नहीं है
नसीहतें, सलाहें, हिदायतें तमाम
पर्चे पर है, पर दवा नहीं है
आँख भी ढक लीजिये संग मुँह के
मंज़र सचमुच अच्छा नहीं है
रक्त बिका, पानी बिका, आज बिक रही है हवा
कुदरत का ये तमाचा बेवजह नहीं है
हरेक शामिल है इस गुनाह में
कुसूर किसी एक का नहीं है
वक्त है अब भी ठहर जाओ।।

पीड़ा पराजय, गत् वर्ष की
छेड़ा तूने पुनः युद्ध है!
जाति तेरी, वो ही बन कर आई,
जो कहते-फिरते, हिन्दी-चीनी भाई-भाई।।

नियम तू भुला युद्ध के,
देखा न तूने छोटा-बड़ा!
चक्रव्यूह रचा, छल-कपट का,
किया उजागर तूने अपने चरित्र का।।

वंचित न रह पाए रिश्ते, तेरे द्वेश स्पर्श से,
घर-घर में तू, कपट से है जो घुसा!
कैद कर दिए सभी रिश्ते-नाते!
अपने अपनों से बचते-घबराते।।

तेरे इस क्रूर प्रहार से,
बिछड़ गए हैं जो अपनों से!
छोड़ गए जो, अधूरे कस्मे-वादे,
पूरे अपनों संग जो करने थे।।

उस विलक्ति भटकती रूह की,
कोसती आह तो ऐसी होगी!
योनि तेरी खत्म कर,
मुक्ति उनको तभी मिलेगी।।

आज किया तूने, माँ धरती का है आँचल लाल,
रक्त बहा जिसका वो भी था किसी का लाल!
खूब हुआ तमाशा-अब ध्वज होगा तेरा लाल,
युद्ध का अंत करेंगे हमारे वैद्यरूपी यशोदा लाल।

➲ ➲ नरेंद्र जोशी

रिटायर्ड

रिटायर्ड आदमी को,
सब फालतू समझते हैं।
वे छोटी-छोटी बातों में,
बार-बार बमकते हैं।
बात करो तो,
अपनी ही हाँकते हैं।
मैंने ये किया, वो किया,
यही फांकते हैं!

पत्नी कहती है
दिन भर कुर्सी तोड़ते हो।
मोबाइल में आंखें फोड़ते हो,
जाओ बाजार से,
कुछ सामान ही ले आओ!

बहू कहती है
मुन्ना रो रहा है,
उसे घुमाने ले जाओ।
चाय बनाने में भी,
वह शर्त लगाती है।
मुन्ना को घुमा लाऊँ,
तब चाय पिलाती है!

रिटायर क्या हुआ,
जैसे मेरी सरकार ही गिर गई।
सात जन्मों की साथी पत्नी भी,
रूलिंग पार्टी से मिल गई!

टीवी देखता हूँ,
तो बच्चे रिमोट छीन लेते हैं।
कार्टून चैनल देख कर,
आस्था लगा देते हैं!
हम आस्था लायक हैं,
ये कैसे जान लेते हैं?
एक पैर कब्र में गया,
ये कैसे मान लेते हैं?

लेडीज जिमनास्टिक्स देखता हूँ,
तो लोग मुझे देखते हैं।
जैसे कहते हों, बूढ़े हो गये,
मगर अब भी आँखें सेकते हैं!

एक दिन नाती पूछ रहा था,
दादाजी, आज पेपर में,
कितने एड आये हैं?
मेरी अनभिज्ञता पर बोला
मम्मी तो कहती है,
आप पेपर चाट जाते हैं।
इतना भी नहीं मालूम,
तो सिर क्यों खपाते हैं?

योगा करता हूँ तो कहते हैं,
मरने से ऐसे डरते हैं।
जैसे दुनियाँ में कभी,
किसी के बाप नहीं मरते हैं!!

➲ ➲ डॉ. रामयश सिंह यादव, इटावा उप्र

पं. रामप्रसाद 'बिस्मिल'
विशेष कविता

हैफ़ हम जिसपे कि तैयार थे मर जाने को
जीते जी हमने छुड़ाया उसी कशाने को
क्या न था और बहाना कोई तड़पाने को
आस्मां क्या यही बाकी था सितम ढाने को
लाके ग़ुरबत में जो रक्खा हमें तरसाने को

फिर न गुलशन में हमें लाएगा सैयाद कभी
याद आएगा किसे यह दिल-ए-नाशाद कभी
क्यों सुनेगा तू हमारी कोई फरियाद कभी
हम भी इस बाग़ में थे कैद से आज़ाद कभी
अब तो काहे को मिलेगी ये हवा खाने को

दिल फ़िदा करते हैं कुरबान जिगर करते हैं
पास जो कुछ है वो माता की नज़र करते हैं
खाना वीरान कहां देखिए घर करते हैं
खुश रहो अहल-ए-वतन, हम तो सफ़र करते हैं
जाके आबाद करेंगे किसी वीराने को

न मयस्सर हुआ राहत से कभी मेल हमें
जान पर खेल के भाया न कोई खेल हमें
एक दिन का भी न मंजूर हुआ बेल हमें
याद आएगा अलीपुर का बहुत जेल हमें
लोग तो भूल गये होंगे उस अफ़साने को

अंडमान ख़ाक तेरी क्यों न हो दिल में नाज़ा
छूके चरणों को जो पिंगले के हुई है जीशां
मरतबा इतना बढ़े तेरी भी तक़दीर कहां
आते-आते जो रहे 'बॉल तिलक' भी मेहमां
'मांडले' को ही यह एज़ाज़ मिला पाने को

बात तो जब है कि इस बात की ज़िदे ठानें
देश के वास्ते कुरबान करें हम जानें
लाख समझाए कोई, उसकी न हरगिज़ मानें
बहते हुए खून में अपना न गरेबां सानें
नासेह, आग लगे इस तेरे समझाने को

अपनी किस्मत में अज़ल से ही सितम रक्खा था
रंज रक्खा था, मेहन रक्खा था, ग़म रक्खा था
किसको परवाह थी और किसमे ये दम रक्खा था
हमने जब वादी-ए-ग़ुरबत में क़दम रक्खा था
दूर तक याद-ए-वतन आई थी समझाने को

हम भी आराम उठा सकते थे घर पर रह कर
हम भी मां-बाप के पाले थे, बड़े दुःख सह कर
वक्तत-ए-रुख्सत उन्हें इतना भी न आए कह कर
गोद में आंसू जो टपके कभी रुख़ से बह कर
तिफ्ल उनको ही समझ लेना जी बहलाने को

देश-सेवा का ही बहता है लहू नस-नस में
हम तो खा बैठे हैं चित्तौड के गढ़ की कसमें
सरफरोशी की अदा होती हैं यों ही रसमें
भाल-ए-खंजर से गले मिलते हैं सब आपस में
बहनों, तैयार चिताओं में हो जल जाने को

अब तो हम डाल चुके अपने गले में झोली
एक होती है फक़ीरों की हमेशा बोली
खून में फाग रचाएगी हमारी टोली
जब से बंगाल में खेले हैं कन्हैया होली
कोई उस दिन से नहीं पूछता बरसाने को

अपना कुछ ग़म नहीं पर हमको ख्याल आता है
मादर-ए-हिंद पर कब तक जवाल आता है
'हरादयाल' आता है 'यरोप' से न 'लाल' आता है
देश के हाल पे रह-रह के मलाल आता है
मुन्तजिर रहते हैं हम ख़ाक में मिल जाने को

नौजवानों, जो तबीयत में तुम्हारी ख़टके
याद कर लेना हमें भी कभी भूले-भटके
आप के जुज़्वे बदन होवे जुदा कट-कट के
और सद चाक हो माता का कलेजा फटके
पर न माथे पे शिकन आए क़सम खाने को

देखें कब तक ये असिरान-ए-मुसीबत छूटें
मादर-ए-हिंद के कब भाग खुलें या फूटें
गाँधी अफरीका की बाज़ारों में सडकें कूटें
और हम चैन से दिन रात बहारें लूटें
क्यों न तरजीह दें इस जीने पे मर जाने को।।

■■■■

कोरोना से बचने के लिए पूरी सावधानी रखें, भविष्य में होने वाली घटनाओं की पूर्व तैयारी अवश्य करें

आजकल कोरोनावायरस के कारण लाखों लोग रोगी हो रहे हैं। कितने ही लोग इस रोग से तथा अन्य कैंसर टीबी हृदयाघात आदि रोगों से भी मृत्यु को प्राप्त हो रहे हैं। इसके कारण चारों ओर जो भयजनक वातावरण बना हुआ है, उससे लोग बहुत घबराए हुए हैं। परंतु घबराने से तो कोई समस्या का समाधान नहीं होता। बुद्धिमत्ता से पुरुषार्थ करने से ही कोई न कोई समाधान निकलता है।

जहां बहुत से वैज्ञानिक और डॉक्टर इस समस्या का हल ढूंढने में दिन-रात लगे हुए हैं। वहीं पर कुछ दुष्ट प्रवृत्ति के लोग भी हैं, जो ऐसे आपत्तिकाल में लोगों की मजबूरी का गलत फायदा भी ले रहे हैं। इन सब परिस्थितियों को देखते हुए आप सबसे निवेदन है, कृपया सबसे पहले भय से मुक्त हों। घबराएं नहीं। यद्यपि समस्या गंभीर है, फिर भी घबराने से तो काम नहीं चलेगा। इसका उपाय करें, और इसका बहुत बड़ा उपाय है कि 'अपनी मानसिक स्थिति को ठीक बनाएं। यदि आप की मानसिक स्थिति अच्छी होगी, तो आप इस समस्या से बाहर निकल आएंगे।' अपनी मानसिक स्थिति को ठीक कैसे बनाएं? 'यदि रोगी नहीं हुए, तो ऐसे सोचें, कि हम इस रोग से बच सकते हैं। यदि रोगी हो गये हों, तो ऐसे सोचें, कि हम निश्चित रूप से ठीक हो जाएंगे।' इस प्रकार से अपना मानसिक उत्साह बनाए रखें।

दूसरी बात- जो घटनाएं भविष्य में होने वाली हैं, जिनको कोई भी रोक नहीं सकता, उनको अच्छी प्रकार से समझ लेवें। उस सत्य को स्वीकार करें। उन घटनाओं की पहले से मानसिक तैयारी करें। जब व्यक्ति भविष्य में होने वाली घटनाओं को अच्छी प्रकार से समझ लेता है, उनकी पहले से मानसिक तैयारी कर लेता है, तब उसे उन घटनाओं के होने पर उतना दु:ख या आश्चर्य नहीं होता। जब वह आने वाली घटनाओं की मानसिक तैयारी नहीं करता, तब उसे अत्यंत दुख तथा आश्चर्य होता है।

जैसे प्रतिदिन रात्रि को अंधेरा होता है। इस घटना को आपने अच्छी प्रकार से समझ लिया है, इस सत्य को स्वीकार कर लिया, और आप प्रतिदिन के रात्रि अंधकार को देखने के लिए पहले से तैयार रहते हैं, तो आपको रात्रि में अंधकार होने पर कोई दु:ख, आश्चर्य या घबराहट नहीं होती। क्योंकि इस घटना को आपने अच्छी प्रकार से समझ और स्वीकार कर लिया है। उसकी पहले से मानसिक तैयारी कर ली है।

परंतु अपना कोई परिवारजन, मित्र रिश्तेदार, कोई पड़ोसी या कोई अन्य परिचित व्यक्ति रोगी हो सकता है, या उसकी किसी रोग आदि के कारण मृत्यु हो सकती है, इस घटना की यदि आप लोग तैयारी नहीं करते। यदि आप ने इस सत्य को स्वीकार नहीं किया। तो जब ऐसे रोगी होने की या मृत्यु की घटना होती है, तब बहुत दु:ख, आश्चर्य एवं घबराहट उत्पन्न होती है। अत: इस दु:ख से बचने के लिए, दवाई चिकित्सा संबंधी पुरुषार्थ तो करें ही। घर में रहें, सुरक्षित रहें। अनावश्यक रूप से घर से बाहर न निकलें। बहुत आवश्यक होने पर, पूरी सुरक्षा के साथ घर से बाहर निकलें। मास्क लगाएं। उचित दूरी बना कर रखें। साथ ही साथ अपनी मानसिक तैयारी भी रखें। इस रोग का विनाश करने के लिए जो वैज्ञानिक, डॉक्टर और वैद्य लोग दिन-रात पुरुषार्थ कर रहे हैं, वे सब बहुत धन्यवाद और सम्मान के पात्र हैं। स्वयं अपनी जान को खतरे में डालकर भी संसार के लोगों की जान बचाने में लगे हैं। कोरोना रोगियों के परिवारजनों ने भी अपने परिवार वाले रोगियों को हस्पतालों में छोड़ दिया, स्वयं उनकी सेवा नहीं कर पाए। परंतु अपरिचित ऐसे डॉक्टर वैद्य अपनी जान की परवाह न करते हुए भी उन रोगियों की सेवा और रक्षा कर रहे हैं।

इस प्रयत्न में कितने ही डॉक्टरों-नर्सों और स्टाफ कर्मचारियों आदि ने अपने जीवन का बलिदान तक दे दिया। ये देवता स्वरूप डॉक्टर-वैद्य और भी जितने इन के स्टाफ के लोग हैं, ये सब निश्चित रूप से बहुत ही सम्मान के पात्र हैं। डॉक्टरों के निर्देश का पालन करें। सरकार की सूचनाओं का पालन करें, उनकी उपेक्षा न करें। संकट की गंभीरता को गहराई से समझें। इतना सब करते हुए भी आप अपने स्तर पर, अपनी मानसिक स्थिति को अवश्य संभालें। इस रोग से अपनी रक्षा करने का यह एक बहुत बड़ा उपाय है, कि कभी भी किसी के साथ भी कुछ भी हो सकता है, यह सत्य है। 'इस सत्य को बार-बार हृदय से स्वीकार करें, और अपने परिवार वालों तथा अन्य लोगों के साथ प्रेम पूर्वक मधुर व्यवहार बनाए रखें। घबराए नहीं, अपने मानसिक बल को बनाए रखें।' ऐसा करने से आपकी मानसिक घबराहट कम हो जाएगी। और आपमें इस रोग से लड़ने की शक्ति भी बढ़ेगी। जो व्यक्ति अपना मानसिक बल बनाए रखेगा, वह इस रोग से लड़ लेगा और जीत जाएगा।

■■ स्वामी विवेकानंद परिव्राजक

समाचार - सूचनाएं

- 11 मई स्वामी श्री दर्शनानन्द सरस्वती स्मृति दिवस पर याद किया गया।
- 15 मई केंद्रीय आर्य युवक परिषद के द्वारा 219वां आर्य वेबिनार जूम मीटिंग द्वारा 18वां स्वामी श्री दीक्षानन्द सरस्वती स्मृति दिवस मनाया गया। मुख्य अतिथि डॉ. अशोक कुमार चौहान व मुख्यवक्ता डॉ. जयेन्द्र कुमार द्वारा सम्पूर्ण आर्यजगत की ओर से भावपूर्ण स्मरण किया गया। ज्ञातव्य हो मूर्धन्य स्वामी दीक्षानन्द जी द्वारा आर्ष गुरुकुल नोएडा का उद्घाटन किया गया था और उन्हीं द्वारा अंतिम वक्तव्य, आशीर्वाद दिनांक 11 मई 2003 में हमारे दशाब्दी समारोह पर दिया गया था। शत्-शत् नमन!!
- 18 मई स्वामी रामेश्वरानन्द सरस्वती स्मृति दिवस पर याद किया गया।
- 28 मई श्री विनायक दामोदर वीर सावरकर जन्म दिवस पर स्मरण किया।
- 31 मई क्रांतिकारी श्यामजी कृष्ण वर्मा को भावपूर्ण स्मरण किया गया।
- 5 जून विश्व पर्यावरण दिवस। ■ 15 जून पंडित चमूपति, एम.ए. स्मृति दिवस। ■ 21 जून अंतरराष्ट्रीय योग दिवस।
- 23 जून राजेन्द्र नाथ लाहिडी जन्म।

हार्दिक शुभकामनाएं

प्रो. डॉ. वेदप्रकाश उपाध्याय हुए हरियाणा साहित्यालंकार सम्मान से सम्मानित

पंजाब यूनिवर्सिटी चंडीगढ़ के संस्कृत विभाग के प्रोफसर एवं चेयरपर्सन पद से सेवानिवृत प्रो. डॉ. वेदप्रकाश उपाध्याय को हरियाणा संस्कृत अकादमी हरियाणा सरकार के द्वारा 2017 के संस्कृत साहित्यालंकार सम्मान नामक राष्ट्रीय पुरस्कार उनके संस्कृत विषयक बहुविध योगदान को दृष्टि में रखते हुए प्रदान करने की घोषणा की गई। संस्कृत के क्षेत्र में हरियाणा सरकार द्वारा पहली बार आरम्भ किया गया यह सर्वोच्च सम्मान है। डॉ. उपाध्याय संस्कृत-वेद में एमए, डीफिल, डीलिट्, वेदाचार्य, दर्शनाचार्य, धर्मशास्त्राचार्य, डिप् इन जर्मन एवं पर्सियन, वेद, दर्शन, धर्मशास्त्र, व्याकरण, साहित्य, वेदांग ज्योतिष, न्याय एवं दंड व्यवस्था आदि के विशेषज्ञ हैं।

पाठक के पत्र

- आदरणीय प्रबंध संपादक महोदय, विश्ववारा संस्कृति का मई अंक अत्यंत सारगर्भित और सुंदर प्रस्तुति है। आपको और आपकी टीम को बहुत-बहुत धन्यवाद!!

- **रामप्रसाद खनेजा**, सेवा निवृत- डायरेक्टर, भाभा एटॉमिक, मुंबई

विनम्र श्रद्धांजलि

गुरुकुल गौतम नगर के सुयोग्य स्नातक तथा उड़ीसा

गुरुकुल के आचार्य श्री बुद्धदेव जी का निधन हो गया आचार्य बुद्धदेव जी उड़ीसा वाले गुरुकुल का संचालन करते थे उनके निधन से संपूर्ण आर्य जगत को बहुत बड़ी क्षति हुई है। परमात्मा दिवंगत आत्मा को शांति व सद्गति प्रदान करे और आर्यजन को इस दारुण दुःख को सहने की शक्ति दे।

महात्मा जगदीश्वरानंद आरोग्याश्रम, मेरठ के मुख्य अधिष्ठाता, आर्य केंद्रीय सभा दिल्ली राज्य के संरक्षक, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के पूर्व अधिकारी एवं आर्य समाज पंजाबी बाग विस्तार के पूर्व प्रधान श्री मदन मोहन सलूजा जी का आकस्मिक निधन हो गया।

श्रद्धा भक्ति से समन्वित, साहित्यिक सौष्ठव से आप्लावित वेदज्ञ, वैयाकरण, सौम्यता की प्रतिमूर्ति, डीएवी स्कूल वैशाली नगर में कार्यरत वेद मंत्रों के व्याख्याकार, लेखक, वैदिक विद्वान श्रद्धेय आचार्य डॉ. रामपाल शास्त्री जी का कोविड संक्रमित होने के बाद निधन हो गया।

श्रद्धेय गुरुवर महामहोपाध्याय प्रो. वेदप्रकाश शास्त्री जी (पूर्व आचार्य एवं उपकुलपति गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय हरिद्वार) के असामयिक निधन से संस्कृत जगत की अपूरणीय क्षति हुई है।

आर्य सिद्धांतों के प्रति समर्पित श्रीमती मीना आर्या (धर्म पत्नी श्री आनन्द कुमार आर्य, प्रधान सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा एवं आर्य समाज टांडा के प्रधान, बाबू मिश्रीलाल आर्य कन्या इंटर कालेज के प्रबंधक और डीएवी एकेडमी इंटर कालेज टांडा के संस्थापक प्रबंधक) का लखनऊ में महाप्रयाण हो गया।

आर्य समाज दिलशाद गार्डन दिल्ली की संस्थापिका लगभग 91 वर्षीय माता कृष्णा शर्मा जी का देहांत हो गया है। वे कुछ वर्षों से बीमार चल रहीं थीं। महामारी के चलते किसी को सूचित भी नहीं किया जा सका। सीमापुरी शमशान घाट पर उनका अंतिम संस्कार कर दिया गया है।

श्री रमेश चंद्र सेवा निवृत वायु सेना, विंग कमांडर, आर्यसमाज नोएडा के समर्पित सदस्य और उनके सुपुत्र निखिल चन्द्र अल्पायु में हम सबको छोड़ गये। प्रभु दिव्यात्मा को शान्ति व सद्गति प्रदान करें।

श्री सुरेश चंद्र जी का जन्म अलीगढ़ प्रांत में 1942 में हुआ था। उन्होंने अलीगढ़ मुस्लिम यूनिवर्सिटी से सिविल इंजीनियरिंग की डिग्री प्राप्त कर केंद्रीय जल आयोग में सहायक निदेशक के पद पर नियुक्त हुए व पदोन्नति प्राप्त करते हुए चेयरमैन के सर्वोच्च पद से सेवानिवृत हुए। उन्होंने कई वर्षों तक आर्ष गुरुकुल नोएडा में ब्रह्मचारियों को निःशुल्क अध्यापन का कार्य किया। कोरोना से ग्रसित होने से उनकी जीवन लीला समाप्त हो गई।

आर्यवीर दल एवं आर्यसमाज जालोर में अजमेर के पांच बार सांसद रहे आर्य समाजी नेता रासा सिंह रावत का निधन हो गया। श्री रावत राजनीति में आने से पहले आर्य समाज द्वारा संचालित विरजानंद स्कूल के प्रधानाचार्य थे। उसके बाद डीएवी स्कूल का प्राचार्य बना दिया गया। वे एक गरिमामय शिक्षक के रूप में विख्यात थे।

आर्यसमाज मयूर विहार के प्रधान श्री एम.के. चाटली जी का कोरोना से निधन हो गया। श्री चाटली अपने पीछे दो बेटे, एक बेटी और भरा पूरा परिवार छोड़ गए हैं। परमात्मा आर्यजन को इस दारुण दुःख को सहने की शक्ति दे।

श्रीमती संध्या शर्मा जी वैदिक विदुषी के जीवन साथी का कोरोना से निधन हो गया। वे बहुत ही साधु प्रवृत्ति के इंसान थे अत्यंत दुःखद।

पूर्व प्रधान आर्ष गुरुकुल एटा, उत्तर प्रदेश, वैदिक साधक आश्रम देहरादून, संरक्षक- सौ गांवों का एक समाज बम्बा कोठी। आर्यसमाज के माननीय दानवीर श्री दर्शन अग्निहोत्री जी का आकस्मिक निधन हो गया। परमात्मा दिवंगत आत्मा को शांति व सद्गति प्रदान करें। **ऐसे आर्यसमाजियों के निधन पर आर्यसमाज, आर्ष गुरुकुल, वानप्रस्थाश्रम नोएडा के सभी सदस्यों, अधिकारियों की ओर से विनम्र श्रद्धांजलि!!**

मानव और पर्यावरण

पर्यावरण दिवस : 5 जून पर विशेष

पर्यावरण शब्द दो शब्दों से मिलकर बना है, परि और आवरण जिसमें परि का मतलब है हमारे आसपास या कह लें कि जो हमारे चारों ओर है। वहीं 'आवरण' का मतलब है जो हमें चारों ओर से घेरे हुए है। पर्यावरण जलवायु, स्वच्छता, प्रदूषण तथा वृक्ष का सभी को मिलाकर बनता है, और ये सभी चीजें यानी कि पर्यावरण हमारे दैनिक जीवन से सीधा संबंध रखता है और उसे प्रभावित करता है।

मानव और पर्यावरण एक-दूसरे पर निर्भर होते हैं। पर्यावरण जैसे जलवायु प्रदूषण या वृक्षों का कम होना मानव शरीर और स्वास्थ्य पर सीधा असर डालता है। मानव की अच्छी-बुरी आदतें जैसे वृक्षों को सहेजना, जलवायु प्रदूषण रोकना, स्वच्छता रखना भी पर्यावरण को प्रभावित करती है। मानव की बुरी आदतें जैसे पानी दूषित करना, बर्बाद करना, वृक्षों की अत्यधिक मात्रा में कटाई करना आदि पर्यावरण को बुरी तरह से प्रभावित करती है। जिसका नतीजा बाद में मानव को प्राकृतिक आपदाओं का सामना करके भुगतना ही पड़ता है। संयुक्त राष्ट्र द्वारा घोषित यह दिवस पर्यावरण के प्रति वैश्विक स्तर पर जागरूकता लाने के लिए मनाया जाता है। इसकी शुरुआत 1972 में 5 जून से 16 जून तक संयुक्त राष्ट्र महासभा द्वारा आयोजित विश्व पर्यावरण सम्मेलन से हुई। 5 जून 1973 को पहला विश्व पर्यावरण दिवस मनाया गया। पर्यावरण के जैविक संघटकों में सूक्ष्म जीवाणु से लेकर कीड़े-मकोड़े, सभी जीव-जंतु और पेड़-पौधों के अलावा उनसे जुड़ी सारी जैव क्रियाएं और प्रक्रियाएं भी शामिल हैं। जबकि पर्यावरण के अजैविक संघटकों में निर्जीव तत्व और उनसे जुड़ी प्रक्रियाएं आती हैं, जैसे- पर्वत, चट्टानें, नदी, हवा और जलवायु के तत्व इत्यादि।

सामान्य अर्थों में यह हमारे जीवन को प्रभावित करने वाले सभी जैविक और अजैविक तत्वों, तथ्यों, प्रक्रियाओं और घटनाओं से मिलकर बनी इकाई है। यह हमारे चारों ओर व्याप्त है और हमारे जीवन की प्रत्येक घटना इसी पर निर्भर करती और संपादित होती हैं। मनुष्यों द्वारा की जाने वाली समस्त क्रियाएं पर्यावरण को प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप से प्रभावित करती हैं। इस प्रकार किसी जीव और पर्यावरण के बीच का संबंध भी होता है, जो कि अन्योन्याश्रित है। मानव हस्तक्षेप के आधार पर पर्यावरण को दो भागों में बांटा जा सकता है, जिसमें पहला है प्राकृतिक या नैसर्गिक पर्यावरण और मानव निर्मित पर्यावरण। यह विभाजन प्राकृतिक प्रक्रियाओं और दशाओं में मानव हस्तक्षेप की मात्रा की अधिकता और न्यूनता के अनुसार है।

पर्यावरणीय समस्याएं जैसे प्रदूषण, जलवायु परिवर्तन इत्यादि मनुष्य को अपनी जीवनशैली के बारे में पुनर्विचार के लिये प्रेरित कर रही हैं और अब पर्यावरण संरक्षण और पर्यावरण प्रबंधन की आवश्यकता महत्वपूर्ण है। आज हमें सबसे ज्यादा जरूरत है पर्यावरण संकट के मुद्दे पर आम जनता को जागरूक करने की।

वायुप्रदूषण में वाहनों से निसृत धुआं व गैसों से विभिन्न रोग फैल रहे हैं। इसके निवारणार्थ वन-सम्पदा के विनाश को रोका जाय, वृक्षारोपण किया जाय। वायु प्रदूषण को प्रभावहीन करने के लिए वैदिक संस्कृति के प्रमुख आयाम यज्ञ का आश्रय लेना ही निवारण का एकमात्र साधन है। वातावरण शोधन व आरोग्य प्राप्ति में यज्ञ की सुरभिमय वायु वातावरण को प्रदूषित होने से बचाती है शुद्धता व निर्मलता भी प्रदान करती है।

अन्न व अन्नाद का संबंध ही यज्ञ है। यही क्रम जब 'यज्ञों वै श्रेष्ठतमं कर्म' के रूप में प्रतिपादित होता है तो देवताद्देश्य हवनीय द्रव्य, शुद्ध, घृत, सुरभिमय व वायुशोधक एवं रोगहर पदार्थों की अग्नि में स्वाहाकार द्वारा आहुति दी जाती है जिसे हम यज्ञ कहते हैं। यह हवि प्रदूषित वातावरण को स्वच्छ, सुगंधित वातावरण में परिणत कर देती है। अग्निहोत्र यज्ञ द्विविध है। प्रथम वह जो धार्मिक विधि-विधानों के साथ मंत्रपूर्वक सम्पन्न होता है। द्वितीय जिसमें मंत्रपाठ न करके विशुद्ध वैज्ञानिक या चिकित्साशास्त्रीय दृष्टि से अग्नि में वायुशोधक, रोगकृमिनिवारक पदार्थों का हवन किया जाता है। आयुर्वेद के चरक, योगरत्नाकर आदि ग्रंथों में ऐसे योग वर्णित हैं जिनकी आहुति देने से राजयक्ष्मा, चेचक, ज्वर, मस्तिष्क रोगादि दूर होते हैं।

कोरोना के इलाज में कारगर नीम की गोलियां !

कोरोना के कहर पर काबू पाने के लिए दुनिया भर में लगातार शोध चल रहे हैं। इस महामारी की काट ढूढ़ने के लिए चिकित्सकों और अनुसंधानकर्ताओं की टीम के साथ-साथ आयुर्वेद में भी लगातार प्रयोग चल रहे हैं। एक ताजा शोध में पता चला है कि नीम की पत्तियों से बनीं गोलियां कोरोना के इलाज में कारगर साबित हो रही हैं।

पिछले दिनों इंडिया इस्टीट्यूट आफ आयुर्वेद (एआईआईए) ने निसर्ग हर्ब्स के साथ मिलकर ईएसआईसी मेडिकल कॉलेज एवं हास्पिटल, फरीदाबाद के साथ मिलकर यह पता लगाने की कोशिश की गई कि नीम की पत्तियों के अर्क से बनी गोलियां कोरोना के उपचार में कितनी कारगर हैं। इस अध्ययन को मेडिकल कालेज में अगस्त से दिसम्बर 2020 के बीच एआईआईए की प्रधान शोधकर्ता प्रो. तनूजा नेसारी और ईएसआईसी मेडिकल कॉलेज एंड हास्पिटल के प्रो. एके पांडे ने किया। इन शोधकर्ताओं ने निसर्ग हर्ब्स के नीम कैप्सूल का मूल्यांकन करने वाले इस अध्ययन के सकारात्मक परिणाम घोषित किए हैं। उन्होंने पाया कि इस अध्ययन ने नीम के फार्मूलेशन डबल-ब्लाइंड ट्रायल में कोविड-19 की रोकथाम में 55 तक प्रभावी होने का संकेत दिया है।

टीकाकरण के दौरान भी उपयोगी : प्रो. पांडे का कहना है कि आयुर्वेद में विभिन्न रोगों के रोगनिरोधकों का बहुत बड़ा योगदान है। इस अध्ययन का निष्कर्ष कोविड-19 के लिए रोग निरोधक बनाने की दिशा में एक सकारात्मक पहल है। खासकर तब जब कोविड -19 संक्रमण के उपचार के लिए कोई विशिष्ट दवाई उपलब्ध नही है। मुझे यकीन है कि यह एक निवारक के रूप में अच्छी तरह से अतिरिक्त सुरक्षा देने के साथ-साथ टीकाकरण की दो खुराक के दौरान भी काम करेगा, जहां संक्रमण की संभावना है। रोगनिरोधी उपायों के लिए सुरक्षा एक और महत्वपूर्ण घटक है। और हम यह देखकर प्रोत्साहित हैं कि इस अध्ययन में उपयोग किए गए नीम फार्मूलेशन में एक बेहतर और स्वीकार्य सुरक्षा प्रोफाइल है। निसर्ग बायोटेक के संस्थापक और सीईओ गिरीश सोमन ने कहा कि उन्हें भरोसा है कि उनकी ये दवा कोरोना की रोकथाम में असरदार एंटी वायरल दवा साबित होगी। इस अध्ययन के परिणाम इंडेक्स्ड, पीर रिव्युड जर्नल 'अल्टरनेटिव थेरपीस इन हेल्थ एंड मेडिसिन' में प्रकाशित किया गया है।

कीरिश्माई ढंग से फायदा करता है नीम

नीम के पेड़ से शायद ही कोई अपरिचित हो। नीम को उसके कड़वेपन के कारण जाना जाता है। नीम के गुणों के कारण इसे धरती का कल्पवृक्ष भी कहा जाता है। आमतौर पर लोग नीम का प्रयोग घाव, चर्म रोग में फायदा लेने के लिए करते है लेकिन सच यह है नीम के फायदे अन्य कई रोगों में भी मिलते हैं। नीम के पत्ते का काढ़ा घावों को धोने मे कार्बोलिक साबुन से भी अधिक उपयोगी है। कुष्ठ आदि चर्म रोगों पर भी नीम बहुत लाभदायक है। नीम का तेल टीबी या क्षय रोग को जन्म देने वाले जीवाणु की तीन जातियों का नाश करने वाले गुणों से युक्त पाया गया है। नीम की पत्तियों का गाढ़ा लेप कैंसर की बढ़ाने वाली कोशिकाओं की बढ़ने की क्षमता को कम करता है।

पीपल 24 घंटे ऑक्सीजन देता है,
बरगद 20 घंटे और नीम 18 घंटे
ऑक्सीजन देता है
प्रण करें,इस मानसून में 10 पेड़
जरूर लगाएं !!

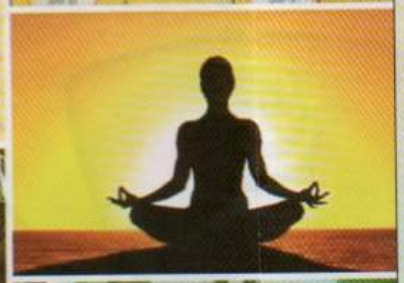

The value of one
Single tree.

आज तो प्यार देना ही
पड़ेगा इस तस्वीर को

जैसी यज्ञ-हवन करने से वायु और
जल की उत्तम शुद्धि और पुष्टि
होती है वैसी अन्य प्रकार से नहीं
हो सकती है।

महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती जी

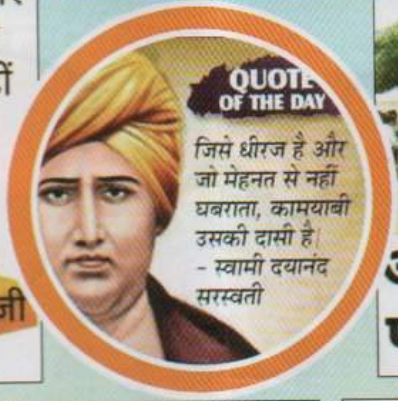

सर्वे भवंतु सुखिनः
सर्वे संतु निरामया

इस कठिन समय में आप
और आपका परिवार स्वस्थ
रहें भगवान से यही कामना है

फलित ज्योतिष,
जादू-टोना,
जन्मपत्री, श्राद्ध,
तर्पण, व्रत, भूत-
प्रेत, देवी
जागरण,
मूर्तिपूजा और
तीर्थ यात्रा
मनगढंत हैं, वेद
विरुद्ध हैं।

घोषणा पत्र संख्या : 153/2016-17 पंजीकरण संख्या : UPMUL/2016/76974 Postal Registration No.- UP/GBD- 249/2020-2022 Date of Dispatch 12 Every Month

मोती हैं अनमोल

19वीं सदी के महापुरुष

गुरुवर स्वामी विरजानन्द सरस्वती, महर्षि दयानन्द सरस्वती
स्वामी श्रद्धानन्द सरस्वती, महात्मा हंसराज
पं. गुरुदत्त विद्यार्थी, पं. लेखराम आर्य 'मुसाफिर'

ओ३म्
विश्ववारा संस्कृति
ओ३म्
आर्य समाज, बी-69, सेक्टर-33, नोएडा (उ.प्र.) दूरभाष : 0120-2505731, 9871798221